चन्दामामा
अक्तूबर १९९६

CHANDAMAMA

It unfolds the glory of India—both past and present—through stories, month after month.

Spread over 64 pages teeming with colourful illustrations, the magazine presents an exciting selection of tales from mythology, legends, historical episodes, glimpses of great lives, creative stories of today and knowledge that matters.

In 11 languages and in Sanskrit too.

Address your subscription enquiries to:
DOLTON AGENCIES 188 N.S.K. ROAD MADRAS-600 026

Rasna
SPREAD MAKER
MIXED FRUIT

चन्दामामा

अक्तूबर १९९६

एक प्रति : ६.००

वार्षिक चन्दा : ७२.००

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

पाठशालाओं के चुनावों में राजनीति

पुराने दिनों में कक्षाओं का एक कक्षा-नायक हुआ करता था। पाठशाला में एक दक्ष नेता होता था, जो ब्रिटिश शिक्षा-परंपरा का एक अंश है। कक्षा के अध्यापक निर्णय करते थे कि कौन कक्षा-नायक हो ? नायक के कुछ निर्धारित कर्तव्य थे। कक्षा के विद्यार्थियों में अपने अध्यापक से अच्छा नाम पाने तथा उनसे सिफ़ारिश पाने के लिए, होड़ लगी रहती थी, क्योंकि अध्यापक की सिफ़ारिश पर ही कोई कक्षा-नायक बन सकता है।

पाठशालाओं में, दक्ष नेता की सिफ़ारिश करने का अधिकार अध्यापक सदस्यों को था, जो दक्ष नेता का नाम सुझाते थे। निर्णय लेते थे प्रधानाध्यापक या प्रधानाचार्य।

यह पद्धति सफल हुई, क्योंकि उन दिनों में विद्यार्थी-संख्या सीमित थी। किन्तु अब तो पाठशालाओं में विद्यार्थियों की संख्या दो हज़ार से तीन हज़ारों तक की होती है। इसलिए उस पुरानी पद्धति को रद्द कर दिया गया और उसकी जगह पर विद्यार्थी संघों का गठन हुआ। इन संघों के पदों के लिए चुनाव होते हैं। पदाधिकारी पाठशाला की गतिविधियों पर संपूर्ण नियंत्रण रखते हैं।

इस कारण राजनैतिक दलों ने इन संघों से अपने संबंध बनाये रखने में दिलचस्पी दिखायी। उन्हें राजनैतिक दलों के आधार पर चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहन दिया। उन्हें उकसाया गया, जिससे पाठशालाओं का शांतिपूर्ण वातावरण कलुषित हो गया। पाठशालाओं, कालेजों व विश्वविद्यालयों में भी यही कलुषित वातावरण देखा जाता है।

विद्यार्थियों के माता-पिताओं की अब मांग है कि ये राजनैतिक दल इन चुनावों में दख़ल न दें। वे निश्चित रूप से जानते हैं कि वे अपने बच्चों को अध्ययन-हेतु भेज रहे हैं न कि राजनैतिक दलदल में गिरने। सच कहा जाए तो उनकी यह मांग समुचित है।

वर्ष : ५०　　अक्तूबर १९९६　　अंक : १

एक प्रति : रु. ६/-　　वार्षिक चन्दा : रु ७२/-

समाचार-विशेषताएँ
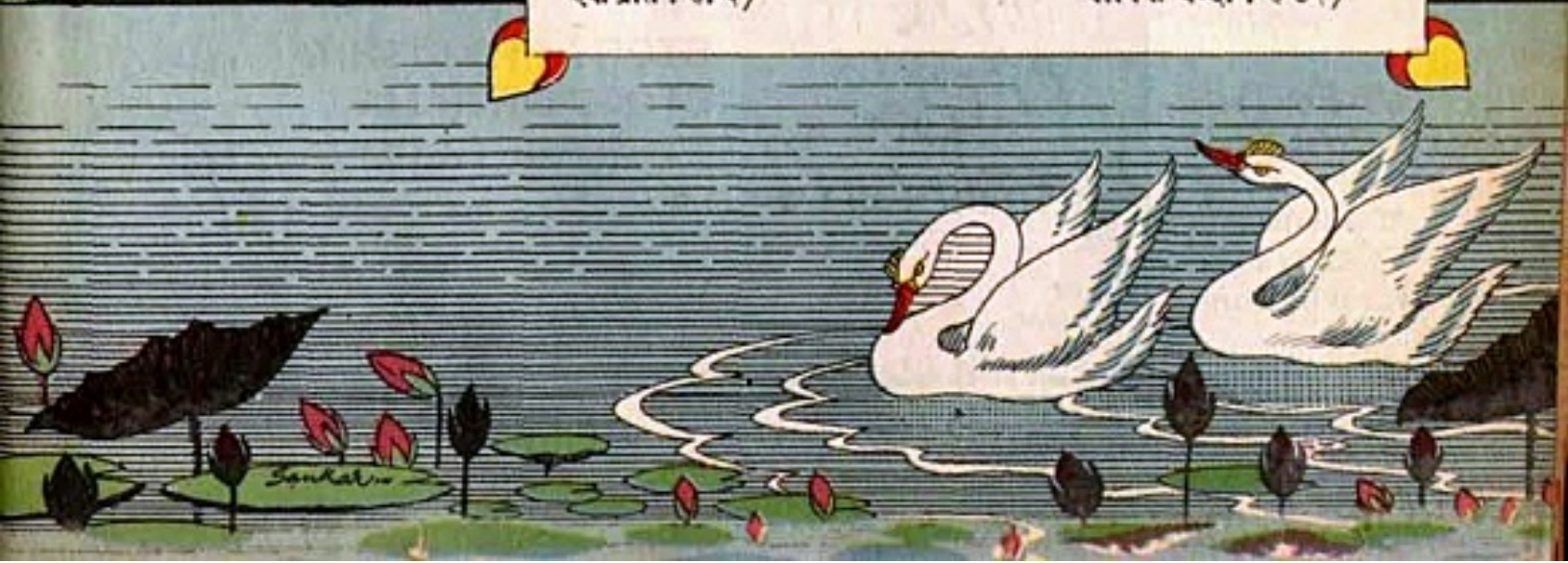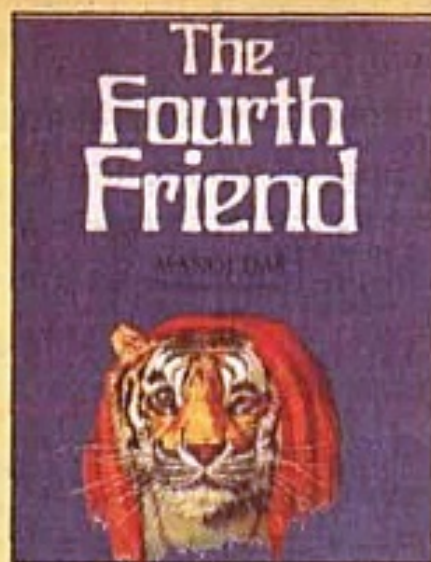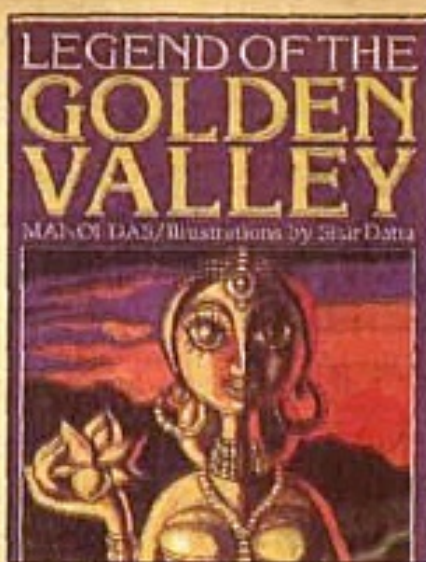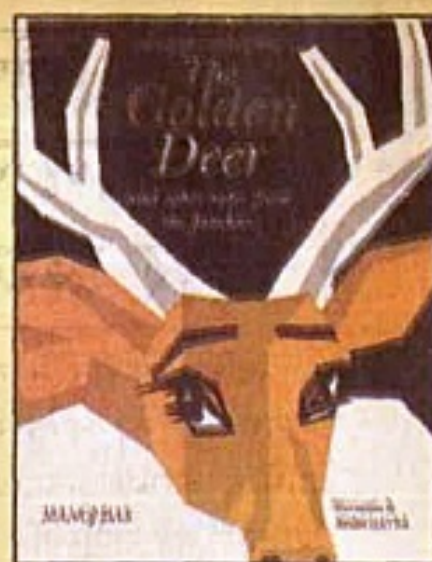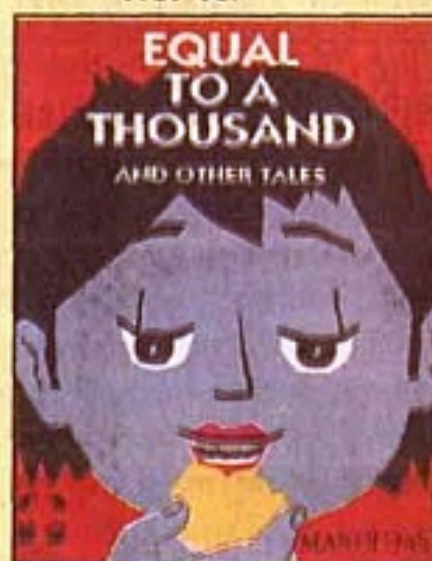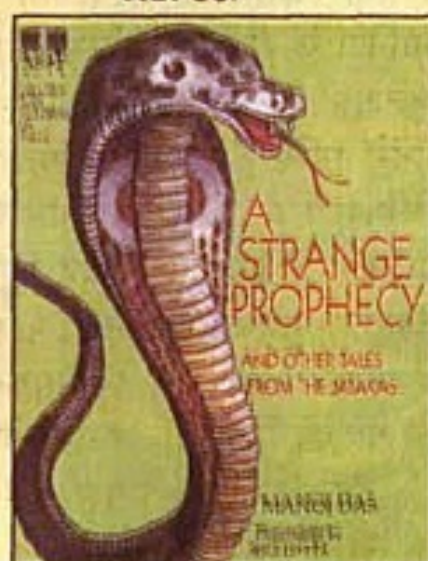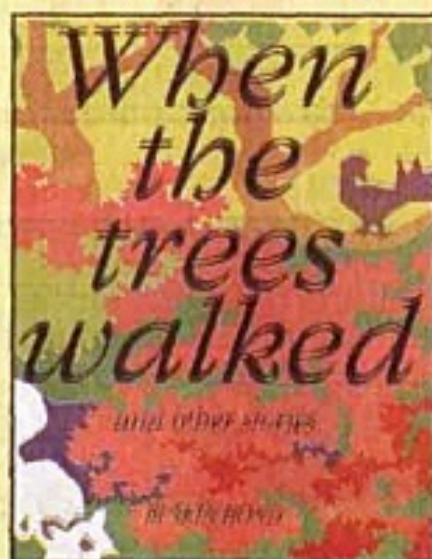
एल्सिन को दूसरी बार अध्यक्ष-पद

बोरिस एल्सिन ने नौ, अगस्त को रूस के अध्यक्ष-पद की शपथ ग्रहण की। मास्को के, क्रेम्लिन कांग्रेस भवन में लगभग पाँच हज़ार व्यक्तियों की उपस्थिति में यह कार्यक्रम संपन्न हुआ। एल्सिन की अस्वस्थता के कारण पंद्रह मिनिटों में ही यह कार्यक्रम पूरा हो गया। गत जुलाई में द्वितीय अध्यक्ष के लिए जो चुनाव हुए, उनमें एल्सिन विजेता घोषित हुए। वे तुरंत चिकित्सा के लिए अस्पताल में दाख़िल हुए और वहाँ पंद्रह दिनों तक विश्राम लिया। अगस्त, ६ को वे कार्यालय आये और ९वीं तारीख़ को पद की जिम्मेदारियाँ संभालीं।

जून, १६ को संपन्न प्रथम चुनावों में न ही एल्सिन को, या न ही उनके प्रधान प्रत्यर्थी कम्यूनिस्ट पार्टी के नेता गेन्नडी जुगनोव को आवश्यक प्रतिशत मत उपलब्ध हुए। इन चुनावों में डेमाक्रटिक पार्टी के नेता व्लाडिमीट जिरनोवस्की तथा पूर्व सोवियत यूनियन के अध्यक्ष मिखैल गोर्बचेव भी उम्मीदवार थे।

एल्सिन का विश्वास था कि पहले दौर में ही उनकी जीत निश्चित है। किन्तु उनकी अस्वस्थता, फेडरेशन के चेचेन्या विद्रोहियों को न हरा पाना, फलस्वरूप देश में उत्पन्न आर्थिक संक्षोभ ने उनकी विजय के अवकाशों को कम कर दिया।

जनवरी में हुए ड्यूमा स्पीकर के चुनाव में कम्यूनिस्ट पार्टी का उम्मीदवार जीता। इससे, १९९१ में विच्छिन्न सोवियत यूनियन के पतनोन्मुख कम्यूनिस्ट पार्टी के शासन का पुनरुद्धार करने की योजना बनी। कम्यूनिस्ट नेता गेन्नडी जुगनोव ने आश्वासन दिया कि अगर वे पुनः सत्तारूढ़ होंगे तो सभी रिपब्लिकों का पुनः एकसूत्र में बाँधेंगे और एक देश के रूप में संगठित करेंगे।

गोर्बचेव का दावा था कि एल्सिन या जुगनोव दोनों में से कोई भी अधिकार हस्तगत करें, प्रजातंत्र के लिए ख़तरा ही साबित होंगे। डेमाक्रटिक पार्टी के नेता जिरिनोवस्की का अभिप्राय था कि गोर्बचेव को छोड़कर बाक़ी तीनों नेता शासन का भार समान रूप से बाँट लें। उन्होंने कहा भी कि अगर ऐसी गुँजाइश हो तो अध्यक्ष-पद के लिए चुनाव लड़ने की ज़रूरत भी नहीं है।

चुनावों के पहले जून में हुए सर्वेक्षण के अनुसार एल्सिन को ३५ प्रतिशत, जुगनोव को २४ प्रतिशत मत मिलेंगे। तभी यह जाना गया कि दूसरी बार भी चुनावों का होना अनिवार्य है। दूसरी बार संपन्न चुनावों में एल्सिन विजेता घोषित हुए।

इन चुनावों को लेकर वहाँ की जनता में एक वक्रोक्ति प्रचलित बतायी जाती है। सुरक्षा-प्रधान एल्सिन से मिले और कहा "एक बुरी ख़बर और एक शुभ समाचार ले आया हूँ।" एल्सिन ने कहा "पहले बुरी ख़बर सुनाइये।" सुरक्षा-प्रधान ने कहा "कम्यूनिस्ट उम्मीदवार ६२ प्रतिशत मत पाकर जीत सकते हैं।" "तो शुभ समाचार क्या?" एल्सिन ने पूछा। "आपको ७२ प्रतिशत मत प्राप्त होंगे।" सुरक्षा-प्रधान ने कहा।

यात्री गोपी

महापंडित अपनी बेटी की शादी की जल्दी में था। किसी परिचित आदमी ने एक रिश्ते का ज़िक्र किया तो दुल्हे को देखने और उसके परिवार के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए शहर निकला। उसने गाड़ीवाले को ख़बर भेजी कि वह उसे अपनी गाड़ी में शहर ले जाए।

उस गाँव से अगर पैदल शहर जाना हो तो जंगल से गुज़रना पड़ता है। सबेरे-सबेरे निकलने पर शाम तक पहुँच सकते हैं। थोडा-सा पैसा खर्च करें तो सुभाष की घोडा-गाड़ी में जा सकते हैं। किन्तु यह रास्ता दूर पड़ता है।

सुभाष की गाड़ी में पाँच लोग आराम से बैठ सकते हैं। कम से कम चार आदमियों के होने पर ही वह शहर जाने तैयार होता है। किसी एक ही आदमी को लेकर वह शहर नहीं जाता। अगर किसी एक ही आदमी के लिए गाड़ी ले भी जानी पड़े तो वह उससे चारों आदमियों का किराया वसूल करता है।

भाग्यवश महापंडित को शहर जाने में कोई दिक़्क़त नहीं हुई, क्योंकि सुभाष की गाड़ी में जाने तीन आदमी पहले से ही तैयार थे। इसलिए शुभ मुहूर्त की भी प्रतीक्षा किये बिना वह निकल पड़ा। टीन की एक छोटी-सी पेटी और पानी का एक ढक्कन बंद लोटा लेकर जब घर के बाहर आया तो देखा, सुभाष की गाड़ी तीन और आदमियों को लेकर आ चुकी थी।

गाड़ी के नीचे जाल की तरह एक गोल तख़्ता था। महापंडित ने अपनी पेटी उसमें रख दी और गाड़ी में जा बैठा। गाड़ी चल पड़ी।

गाड़ी में दो आदमी आगे बैठे हुए थे। उनमें से सीताराम को महापंडित जानता

लक्ष्मी कामत

था। दूसरा, रंगनाथ किसी काम पर गाँव आया था और अब शहर लौट रहा है। महापंडित के साथ-साथ बैठा गोपी अधेड उम्र का था। वह अपने रिश्तेदार धनीराम के घर आया और व्यापार से संबंधित किसी काम पर शहर आ रहा है।

गोपी के सामने टीन की एक पेटी नीचे रखी हुई थी। जमकर बैठने के लिए अपने पैरों को पेटी से सटाकर महापंडित बैठ गया। ऐसा बैठने से वह आराम महसूस कर रहा था। किन्तु गोपी ने इसपर आपत्ति उठायी और कहा "पेटी में भगवानों की तस्वीरें हैं। वहाँ से पैर हटावो।"

महापंडित ने अनायास ही पेटी को भक्ति-भाव से छूया और अपने पैर वहाँ से हटा दिये। किन्तु ऐसा बैठने में उसे तक़लीफ़ महसूस हो रही थी। आगे जो बैठे हुए थे, पैर फैलाकर आराम से बैठे थे। गोपी भी पैर फैलाकर बैठा हुआ था। केवल महापंडित पैर फैलाकर बैठ नहीं पा रहा था।

थोड़ी देर बाद महापंडित ने गोपी से कहा "महाशय, अपनी पेटी ज़रा इधर सरकाइये। पैर न फैलाकर बैठने में मुझे तक़लीफ़ हो रही है।"

गोपी ने पेटी को महापंडित की तरफ़ सरकाया।

तब महापंडित ने अपना हाथ पेटी पर रखा और पैर फैलाकर आराम से बैठ गया। गोपी ने उससे, पेटी से हाथ हटा देने के लिए कहा।

महापंडित चिढ़ता हुआ बोला "यह पैर नहीं, हाथ है।" "पेटी के अंदर काँच के सामान हैं। पेटी दबेगी तो काँच का सामान टूट जायेगा" गोपी ने कारण बताया।

"महाशय, यह तो टीन की पैटी है। इतनी आसानी से दब नहीं जायेगी।"

तो नहीं समझता, कि इससे आपको तक़लीफ़ पहुँच रही है। गाड़ी में एक और आदमी के लिए भी जगह है। उस जगह पर मैंने अपनी पेटी रखी। एक और आदमी बैठता तो क्या आप उसे अपने पैरों से मारते? कंधे पर हाथ रखकर नहीं बैठते ना? जो तक़लीफ़ उस समय नहीं होती, अब क्यों हो?'' गोपी ने कहा।

महापंडित उसकी दलील का जवाब नहीं दे पाया। इतना तो समझ गया कि गोपी बड़ा ही जिद्दी है। उसने ठान लिया कि मौक़ा पाकर बदला लूँगा।

थोड़ी देर बाद गोपी ने चुरुट अपने हाथ में लिया और आगे बैठे सीताराम से दियासलाई माँगी। उसके और दूसरों के पास भी दियासलाई नहीं थी। गोपी की असहनशीलता बढ़ती गयी।

महापंडित को प्यास लगी। बगल में रखे लोटे का ढक्कन खोलकर पानी पीने ही वाला था कि गोपी ने कहा ''महोदय, आप गाड़ी में पानी मत पीजियेगा। हम पर पानी के गिरने की संभावना है। वह भी जूठन का पानी। हो सकता है, कुछ बूंदें मेरी पवित्र पेटी पर भी गिरें। इसलिए आप लोटे का ढक्कन मत खोलिये।''

''मुझे तो बड़ी प्यास लगी है। क्या गाड़ी रोकने को कहूँ?'' महापंडित ने अपनी नाराज़ी छिपाते हुए पूछा।

''मुझे तो शहर जल्दी पहुँचना है। आपकी बात मैं क्या जानूँ? छोटी-छोटी-सी बात पर गाड़ी रोकेंगे तो समय पर कैसे पहुँच पायेंगे? जान ही बचानी हो तो ठीक

महापंडित ने धीमे स्वर में अपनी दलील पेश की।

गोपी ने 'न' के भाव में अपना सर हिलाते हुए कहा ''वह टीन पतला है। कांच का सामान पेटी के ऊपरी हिस्से में ही है। साथी मुसाफ़िर को तक़लीफ़ पहुँचाना अच्छी पद्धति नहीं है। कृपया अपना हाथ पेटी से हटाइये।''

उसके स्वर में कटुता नहीं थी, इसलिए महापंडित की समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए। क्षण भर सोचने के बाद उसने कहा ''ऐसी हालत में पेटी गाड़ी के नीचे ही रखते। बैठने में मुझे तक़लीफ़ हो रही है।''

''पेटी में भगवानों के चित्र हैं, कांच का सामान है, इसीलिए साथ ही रख लिया। मैं

है, गाड़ी रोक ली। किन्तु सिर्फ़ प्यास बुझाने के लिए गाड़ी रोकना ठीक होगा?'' गोपी ने अपनी अस्वीकृति जताते हुए कहा।

महापंडित में उक्रोश भर आया। उसने पानी नहीं पिया। गाड़ी जब और आगे बढ़ी तो उसने थोड़ी दूरी पर एक आदमी को देखा। उसके मुँह से धुआँ निकल रहा था। तब गोपी से उसने कहा ''महाशय, कोई चुरुट पीता हुआ आ रहा है। गाड़ी रुकवा दूँ?''

गोपी यह सुनकर खुश हुआ और उसने गाड़ीवाले से गाड़ी रोकने को कहा। महापंडित लोटे को लेकर नीचे उतरा और कहा ''लगता है, मैं उस आदमी को जानता हूँ। पर प्यास के कारण गला सूख गया। बात भी नहीं निकलती। क्या पानी पी लूँ?'' गोपी ने कहा ''गाड़ी में पीने से मना किया था। भला यहाँ पीने में क्या हर्ज़ है?''

महापंडित के पानी पीते-पीते वह आदमी पास आ गया। उसने महापंडित को पहचाना और कहा ''आप! माफ़ कीजियेगा।'' कहते हुए उसने मुँह में से चुरुट निकालकर दूर फेंक दिया।

''अरे, तुमनें यह क्या कर दिया? इस चुरुट के लिए ही तो यहाँ रुक गये।'' महापंडित ने कहते हुए उसे चुरुट की ज़रूरत बतायी।

''आप घबराइये मत। वह अच्छे तंबाकू का चुरुट है। इतनी जल्दी बुझ नहीं जायेगा। लगता है, पास ही की झाड़ियों में गिर गया। लाकर इन्हें दूँ?'' चुरुट पीनेवाले ने पूछा।

''एक तो ज़मीन पर गिरा। मालूम नहीं, वहाँ कैसा कूड़ा-करकट होगा। फिर से उसे छूओगे? नहीं, नहीं, कदापि नहीं। क्या तुम्हारी अक़्ल मारी गयी?'' महापंडित ने कटु स्वर में कहा। ''यजमान, चुरुट पीने
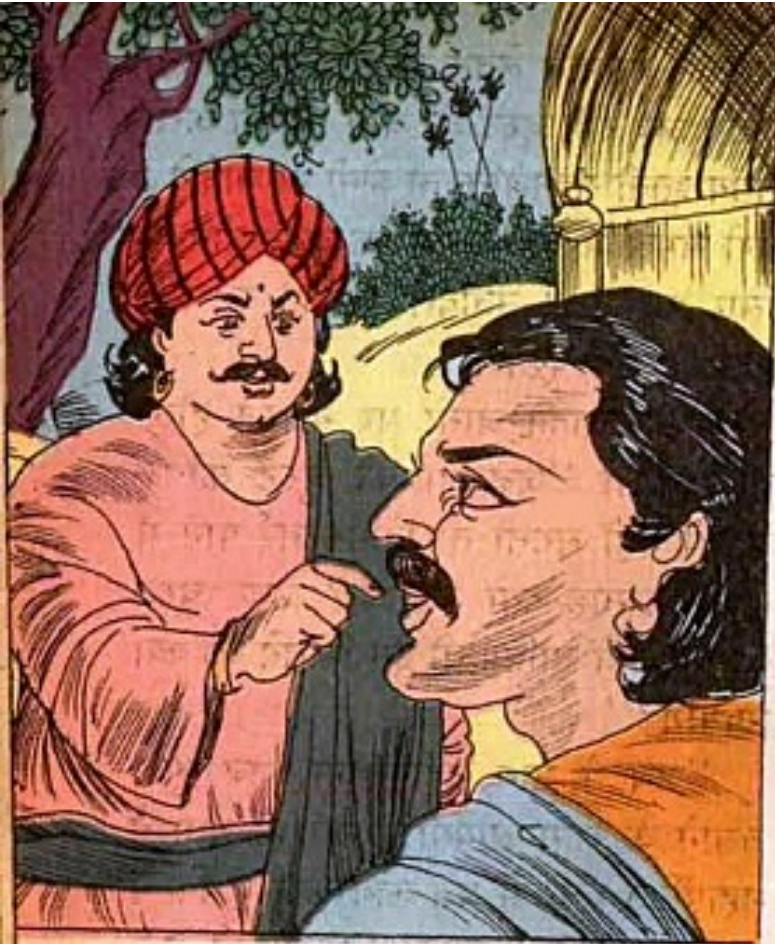
की आदत ही कुछ ऐसी है। उसे न पीओगे तो दिमाग़ काम नहीं करता। आप क्या जानें इस आदत की अच्छाई-बुराई। कूड़ा-करकट में गिरा तो क्या हुआ? आग तो आग ही होती है ना?'' चुरुट पीनेवाले ने कहा।

''अब चुप हो जा। गोपी ऐसे आदमियों में से नहीं हैं। पवित्रता पर मरनेवालों में से हैं। अब तुम अपना रास्ता नाप।'' कहकर महापंडित ने उसे भेज दिया और गाड़ी में बैठ गया।

थोड़ी देर बाद महापंडित ने, गोपी को देखते हुए कहा ''आपका चुरुट पीने का काम तो रह गया किन्तु मैंने उसके बहाने अपनी प्यास बुझा ली।''

चुरुट पीने की इच्छा गोपी पूरी नहीं कर सका। मन ही मन वह चिढ़ता रहा, पर चुप बैठा रह गया। भला, वह कहे भी तो क्या कहे।

किन्तु महापंडित चुप नहीं रहा। रास्ते भर वह आग की कोशिश में लगा रहा। देखा कि कोई आदमी थाली में जलते अंगारे लिये जा रहा है। पर मालूम हुआ कि ये अंगारे होम के हैं। इनसे चुरुट जलाना पाप है।

एक और जगह पर उन्होंने देखा कि कोई आदमी कुल्हड़ में आग ले जा रहा है। परंतु उससे भी चुरुट जलाया नहीं जा सका, क्योंकि उस आग से मांस जलाया गया है। रास्ते में उन्होंने कुछ पथ्थर देखे तो सोचा ये चकमुक पथ्थर होंगे। गाड़ी रोकी। बहुत रगड़ने के बाद भी उन पथ्थरों से आग ही नहीं निकली। महापंडित ने थोड़ा-सा पानी पीते हुए कहा ''अपनी प्यास बुझाने का भाग्य है मुझे, पर आग के मिलने के भाग्य से वंचित लग रहे हैं आप।''

रास्ते भर महापंडित आग पाने के प्रयत्न में लगा रहा, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बाक़ी मुसाफ़िरों और गाड़ीवाले को भी उसकी इस चर्या पर आश्चर्य हो रहा था। गोपी के हाथों सताये गये महापंडित के ये प्रयत्न उन्हें विचित्र ही लगे। किन्तु गोपी मन ही मन समझता रहा कि ये सब चालें पानी पीने के लिए हैं।

आख़िर एक पथिक से महापंडित दियासलाई पाने में सफल हुआ। उस पथिक ने उससे कहा ''मेरे पास एक और दियासलाई की डिबिया भी है। इसे अपने पास रख लीजिये। ज़रूरत पड़ने पर काम

आयेगी।"

दियासलाई की डिबिया लेकर महापंडित गाड़ी में बैठ गया। उसने वह डिबिया गोपी को दी। तब गोपी का आनंद वर्णनातीत था। बड़े ही आनंद से उसने चुरुट मुँह में रख लिया और जैसे ही वह जलाने लगा, महापंडित ने उससे कहा "महाशय, आप शायद चुरुट जलानेवाले हैं। उसकी बू से मुझे चिढ़ है।"

"तो मिनिट भर गाड़ी रोक लेंगे। चुरुट पीने पर ही मेरी जान में जान आयेगी", गोपी ने कहा।

"आपकी बात तो मैं नहीं जानता, पर मुझे पहुँचना है, बहुत ही जल्दी। अत्यावश्यक काम है। बात-बात पर गाड़ी रोकना मुझे पसंद नहीं।" महापंडित ने कहा। "जब-जब आपको प्यास लगी, गाड़ी रोकते रहे। मेरे लिए क्यों नहीं रुकेगी ?" नाराज़ हो कहा गोपी ने।

"आप ही ने तो कहा था कि मुसाफ़िर को कभी कष्ट पहुँचाना नहीं चाहिये। आप शायद इस ग़लतफ़हमी में हैं कि मैंने पानी पीने के लिए गाड़ी रोकी। आग के लिए आपकी अनुमति लेकर ही मैं गाड़ी रोकता रहा। अब रही चुरुट की बात। यात्रा करते समय इतनी सहनशक्ति तो होनी ही चाहिये। मेरी समझ में नहीं आता कि चुरुट पीने के लिए आप इतने उतावले क्यों हो रहे हैं" महापंडित ने पूछा।"

गोपी उसकी बातों पर नाराज़ होता हुआ बोला "जब आपको चुरुट की बू अच्छी नहीं लगती तो दियासलाई पाने में इतना उत्साह क्यों दिखाया? अगर चुरुट जलाना नहीं चाहिये तो इस डिबिये का क्या उपयोग?"

"जब मैं साथ नहीं रहूँगा, तब चुरुट जलाने के काम आयेगी। मेरा ही नाम है महापंडित। घर में सब कहा करते है कि मैं महा जिद्दी हूँ। आपने कितनी ही बार एतराज किया। कम से कम एक बार ही सही, आपको अपना एतराज जता सकूँ, इसीलिए मैंने दियासलाई की डिबिया को पाने का सफल प्रयत्न किया।" महापंडित ने कहा।

यह सुनकर बाक़ी तीनों हँस पड़े। गोपी ने शरम के मारे सिर झुका लिया।

रात या दिन?

उपेंद्र रामगढ़ का ज़मींदार था। कर वसूल करने तथा जनता के सुख-दुखों के बारे में जानने व जानकारी प्राप्त करने के लिए एक योग्य व्यक्ति की ज़रूरत पड़ी। वह चाहता था कि यह व्यक्ति बहुत ही अक़्लमंद व तेज़ हो। दीवान ने मुनादी पिटवायी कि ऐसा योग्य व्यक्ति उससे और ज़मींदार से समक्ष आकर मिले।

ज़मींदार की उपस्थिति में दीवान ने वहाँ आये युवकों से एक-एक करके प्रश्न पूछा ''समझ लो, बारह फुट की गहराई और दस फुट की चौड़ाई के गड्ढे में तुम गिर गये। तब तुम कैसे बाहर आओगे?''

हर कोई यही कहने लगा ''सहायता के लिए मैं चिल्लाऊँगा, जिससे कोई न कोई आयेगा और मुझे ऊपर खींचेगा।'' किन्तु अंत में एक युवक ने दीवान से पूछा ''महाशय, जिस गड्ढे में मैं गिरा हूँ, उसमें क्या कोई सीढ़ी है?''

''अगर वहाँ सीढ़ी होती तो मैं भला क्यों ऐसा प्रश्न पूछता?'' दीवान ने कहा।

''वह दिन है या रात?'' युवक ने पूछा।

''समस्या रात और दिन की नहीं। समस्या तो गड्ढे से ऊपर आने की है।'' दीवान ने चिढ़ते हुए कहा।

युवक ने कहा ''जब समय रात का नहीं और जब मैं अंधा भी नहीं हूँ, तो आप ही बताइये, भला मैं क्योंकर उस गड्ढे में गिरूँगा।''

उसका जवाब सुनकर ज़मींदार ने मुस्कुराते हुए तुरंत कहा ''फौरन उसे नौकरी की जिम्मेदारियाँ सौंपिये।''

-सतीश रावत

१८

(धीरमति ने घर लौटकर अपनी माँ पद्ममुखी को सारी बातें बतायीं, किन्तु अपने पिता की बात उससे छिपायी। पैलास से उसी के साथ-साथ आया एक ज्ञानी उसके घर अतिथि बनकर आया। उस अतिथि के खा चुकने के बाद, उस घर में बैठे सब दुष्ट विशाल कक्ष में भोजन करने लगे। तब वहाँ एक बूढ़े भिखारी के रूप में रूपधर आया। उसने धीरमति की दी रोटी खायी और फिर सबसे भीख माँगने लग गया।) - बाद

रूपधर के घर जमकर बैठे उन दुष्टों को उस बूढ़े भिखारी पर दया आयी। उन्होंने अपनी-अपनी इच्छा के मुताबिक़ थोड़ा-बहुत दान दिया। कुछ दुष्टों ने आश्चर्य-भरे स्वर में पूछा "यह बुड्ढा कौन है? यहाँ क्यों आया?"

वहीं बैठे चरवाहे काली ने कहा "साहबो, इस बूढ़े को मैं पहले ही देख चुका हूँ। इसे सुवरों का रखवाला अपने साथ ले आया था।"

उसकी बातें सुनकर दुर्बुद्धि ने सुवरों के रखवाले से कहा "कहीं तुम्हारे बुरे दिन तो नहीं आये, जो इसे अपने साथ ले आये। क्या इस नगर में धुमक्कडों और भिखमंगों का अकाल पड़ गया? जो इस निकम्मे को, इस खूसट को यहाँ ले आये? तुम्हारे मालिक की संपदा को लूटने के लिए क्या भिखमंगों की कमी पड़ गयी?"

"देखिये, आप बड़े हो सकते हैं, पर हम नौकरों के विषय में बहुत सख्ती बरत

रहे हैं । अनाप-शनाप बोल रहे हैं । क्या भिखारी को कोई जान-बूझकर अपने साथ ले आता है? आपसे मेरा कोई वास्ता नहीं । मेरी मालकिन और छोटे मालिक मेरे लिए सब कुछ हैं । वे सुखी रहें तो समझ लीजिये, मैं भी सुखी हूँ ।''

धीरमति ने सुवरों के रखवाले से कहा ''चुप हो जा । बेकार बातों से क्या फ़ायदा?'' फिर दुर्बुद्धि से कहा ''चूँकि तुम बलवान हो, इसलिए तुम चाहते हो कि इस बुड्ढे को घर से बाहर निकाल दूँ । यही है न तुम्हारी सलाह, तुम्हारा उद्देश्य? ऐसा कभी नहीं होगा । तुमसे हो सके तो दान दो, नहीं तो चुप रहो । हाँ, मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि खाने में तुम्हारी अभिरुचि है, दान देने में नहीं । कंजूसी की भी एक हद होती है ।''

''वाह रे वाह, तुमने तो लंबा भाषण दे दिया । मैं इस बुड्ढे को जो देनेवाला हूँ, वही सभी देंगे तो यह इस घर को झाँककर भी नहीं देखेगा ।'' कहते हुए उसने झुककर अपने पैरों के नीचे का पाटा ऊपर उठाया ।

इतने में रूपधर ने बाक़ी अतिथियों से जो लेना था लिया और अपनी झोली में डाल लिया । फिर दुर्बुद्धि के पास आकर कहा ''साहब, सबों में से आप महान लगते हैं । इसलिए आपको औरों से अधिक देना होगा । मैं भी कभी संपन्न था, समृद्ध था । सुखी जीवन बिताया । हज़ारों की संख्या में नौकर-चौकर थे । किन्तु देवता मुझपर नाराज़ हो उठे और समुद्र में लूटने के लिए मुझे भेज दिया । ईजिप्ट में मेरे सब अनुचर शत्रुओं के हाथों मारे गये । मैं असहाय और दिशाहीन होकर इधर-उधर भटक रहा हूँ । ज़िन्दगी में मेरा कोई अपना न रहा, अकेला हूँ ।''

''बाप रे, इससे पिंड कैसे छूटेगा? आराम से खाने भी नहीं देता । जाओ, दूर खड़े हो जाओ । भिखारी हो, पर तेवर दिखाते हो? सावधान, एक भी लफ़्ज़ निकाला तो फिर से ईजिप्ट भिजवा दूँगा । हाँ, हाँ, ये लोग तुम्हें दान क्यों नहीं देंगे? यह थोड़े ही इनकी बपौती है?'' दुर्बुद्धि ने कहा ।

''साहब, देखने में बड़े लगते हैं, पर लगता है, आपका दिल, आपका दिमाग़ बहुत ही छोटा है । यह जायदाद आपकी नहीं है, फिर भी जब दान देने में आप इतना सकुचा रहे हैं तो सचमुच अगर यह

आपकी जायदाद होती तो क्या देते? खाक़ देते? अपनी हथेली बंद रखते। देनेवालों को डाँटते, उनपर पिल पड़ते। है ना? यहाँ खाने के लिए इतना बिखरा पड़ा है, उसमें से रोटी दे देंगे तो आपका क्या जायेगा?'' कहकर वह वहाँ से निकला। ''जो मुँह में आया बके जा रहे हो।'' कहते हुए दुर्बुद्धि ने अपने हाथ में लिया पाटा उसपर फेंक दिया। वह रूपधर के दायें कंधे से जा लगा।

किन्तु रूपधर ने उस चोट की परवाह नहीं की। उसने पलटकर आक्रोश भरे स्वर में कहा ''इस घर की मालकिन से शादी की इच्छा रखनेवालो साहबो, मेरी बात ध्यान से सुनिये। अपनी जायदाद को महफ़ूज़ रखने की कोशिश में किसी को चोट पहुँचायीं, तो यह कोई बुरी बात नहीं है। पर कोई आदमी अपना पेट भरने के लिए भीख माँग रहा हो और उसे मारा जा रहा हो, तो यह एकदम नाइन्साफ़ी है। हम भिखमंगों को बचानेवाला कोई भगवान हो तो अवश्य ही इस दुर्बुद्धि की शीघ्र ही अर्थी उठेगी।''

''बकबक बंद करते हो या नहीं। चुप नहीं रह सकते तो निकल जाओ यहाँ से। तुम्हारे मुँह से एक भी बात निकली तो हम सब मिलकर तुम्हारी चमडी उधेड़ देंगे। सावधान'' दुर्बुद्धि ने नाराज़ी से कहा।

उस बूढ़े भिखारी के प्रति, दुर्बुद्धि का यह दुर्व्यवहार बाकी लोगों को अच्छा नहीं लगा। ''उस बूढ़े को नहीं मारना था'' ''हो सकता है, इसमें भिखारियों का भगवान हो'''''कभी-कभी भगवान ही इस रूप में

आते हैं'' यों कुछ लोगों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किया।

दुर्बुद्धि ने उनकी एक भी बात न सुनी। किन्तु अपने पिता पर किये गये प्रहार से धीरमति बहुत ही क्रोधित हुआ। पर उसने अपने दुख व क्रोध को प्रकट होने नहीं दिया।

वहाँ घटी घटना का पूरा ब्योरा पद्मावती को परिचारिकाओं द्वारा मालूम हुआ। उसने सुवर के रखवाले को बुलाकर कहा ''उस भिखारी को एक बार मेरे पास ले आओगे? सुना है कि उन्होंने बहुत से देशों में भ्रमण किया। मेरे पति के बारे में शायद उन्हें कुछ मालूम हो।''

सुवर का रखवाला रूपधर के पास आया और कहा ''मालकिन तुम्हें बुला रही हैं।

मेरे यजमान के बारे में तुम अगर कुछ जानने हो तो सुनना चाहती हैं।''

''तुम्हारे यजमान के बारे में मुझे बहुत कुछ मालूम है। किन्तु यह बताने का समय नहीं है। अपनी मालकिन से बताना कि अंधेरा छा जाने के बाद आऊँगा और उनसे मिलूँगा। बताना कि वह उस समय अकेली ही रहें।'' रूपधर ने धीरे से सुवरों के रखवाले से कान में कहा।

सुवरों के रखवाले ने पद्मावती को यह समाचार सुनाया और वापस आकर धीरमति से बताया ''छोटे मालिक, अब मैं लौटूँगा। सुवरों की देखभाल ज़रूरी है। पर इस बूढ़े का ख्याल रखना। देखा न, कितनी बड़ी चोट पहुँचायी।

''इस बूढ़े की चिंता मत कर। जरूर खाना खाकर जाना।'' धीरमति ने कहा। सुवरों के रखवाले के जाते-जाते दुपहर हो गयी। सभी गीत-नृत्यों में डूबकर मौज़ मना रहे थे। उस समय वहाँ एक और भिखारी आया। वह तो सचमुच ही भिखारी था, जिसे शहर की सड़कों पर हर रोज़ देखा जाता है। वह सबों को शहर के समाचार सुनाया करता था, इसलिए उसे दूत कहते थे।

अंदर प्रवेश करते ही उस दूत ने रूपधर को देखकर गरजते हुए कहा ''अरे ओ बुड्ढे, कौन हो तुम? जाते हो या खींचकर बाहर फेंक दूँ?''

''मैंने क्या तुमसे कोई बात की? तुम्हारे बारे में क्या कुछ कहा? मुझपर अपना रोब क्यों जमाते हो? तुम्हें भीख माँगनी है तो माँग लो। अब रही बाहर फेंकने की बात। बुड्ढा होते हुए भी मैं तुम्हें बाहर फेंक सकता हूँ।'' रूपधर ने जवाब दिया।

''इतना घमंड। उठ और खड़े हो जा।

तय हो जाए कि हममें से कौन बलवान है। अरे बुड्ढे खूसट। मुझे जवान को चुनौती देते हो?'' दूत ने कहा।

दोनों भिखमंगों को पागल कुत्तों की तरह भूँकते हुए देखकर दुबुद्धि बहुत खुश हुआ। उसने ऊँचे स्वर में कहा ''मित्रो, देखना है कि इन दोनों में से कौन जीतेगा। इनकी लड़ाई हमारे मनोरंजन की सामग्री है।''

सब उठे और दोनों भिखारियों को घेर लिया। दुबुद्धि ने कहा ''तुम दोनों में से जो जीतोगे, वह शाम तक यहाँ रह सकता है और खूब खा-पी सकता है। जो हारेगा, उसे यहाँ रहने नहीं देंगे।''

''साहब, मैं एकदम बूढ़ा हूँ। मुझे लड़ना है एक जवान से। आप सभी वचन दीजिये कि आपमें से कोई भी मुझे नहीं मारेगा। पीठ-पीछे प्रहार नहीं करेगा। आप अपने दूत की मदद नहीं करेंगे तो मैं यथाशक्ति लड़कर जीतने का प्रयत्न करूँगा।'' रूपधर ने कहा।

सब ने क़सम खायी कि वे दख़ल नहीं देंगे। तब धीरमति ने रूपधर से कहा ''मैं इस घर का मालिक हूँ। यहाँ कुछ ऐसे भी आदमी हैं, जो न्याय में विश्वास रखते हैं। हम तुम्हें आश्वासन देते हैं कि यहाँ तुम्हारे साथ अन्याय नहीं होगा।''

रूपधर ने अपनी फटी-पुरानी धोती को कसकर ऊपर बाँध लिया। उसकी बलिष्ठ जाँघें, पिंडलियाँ, विशाल भुजाओं को देखकर सब के सब चकित रह गये। उन्होंने सोचा ''बस, अब हमारे दूत का अंतिम समय आ ही गया। यमदूतों के आने भर की देरी है।''

अब दूत की स्थिति वर्णनातीत थी। वह भय से थर-थर काँप रहा था। उसकी धोती को ऊपर उठाकर बाँधने के लिए
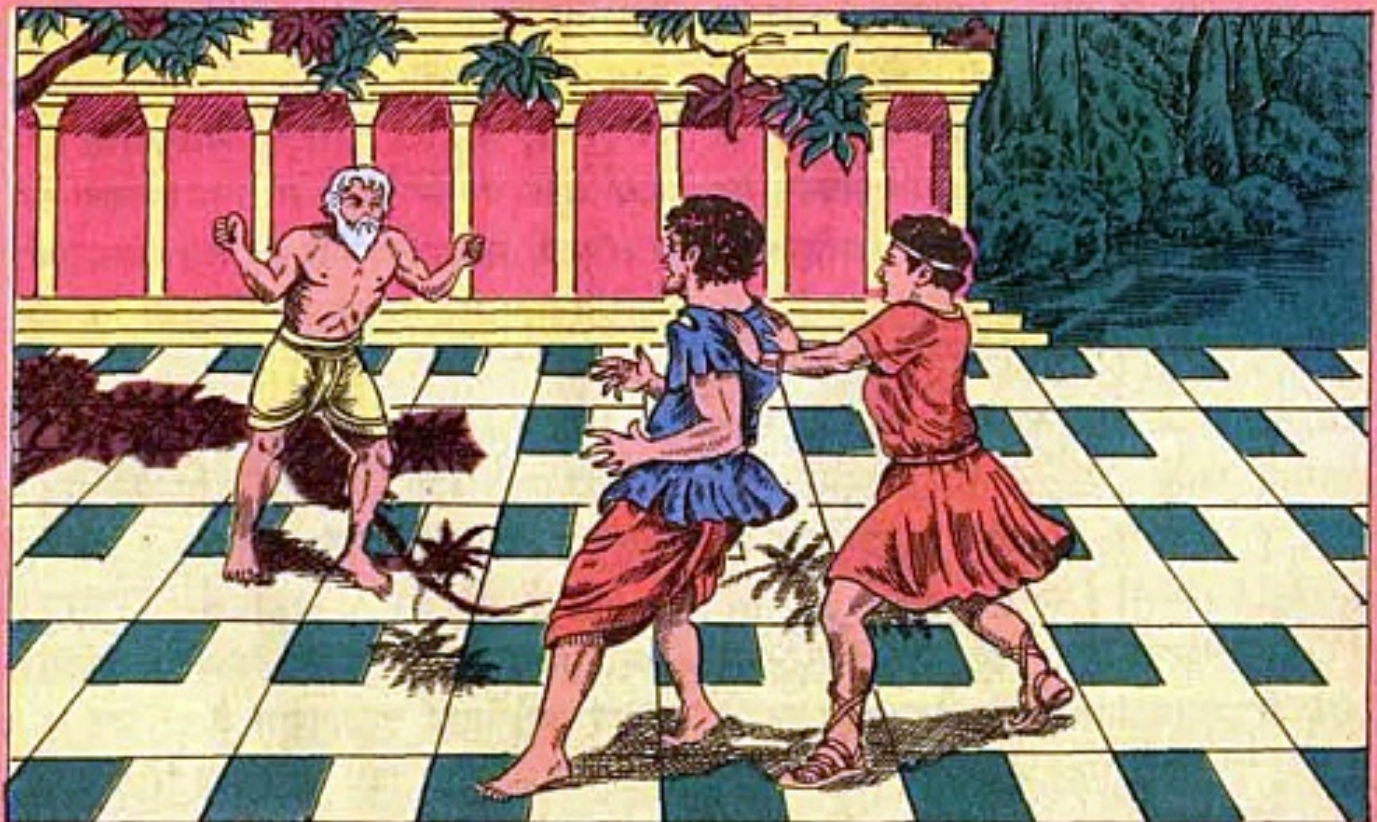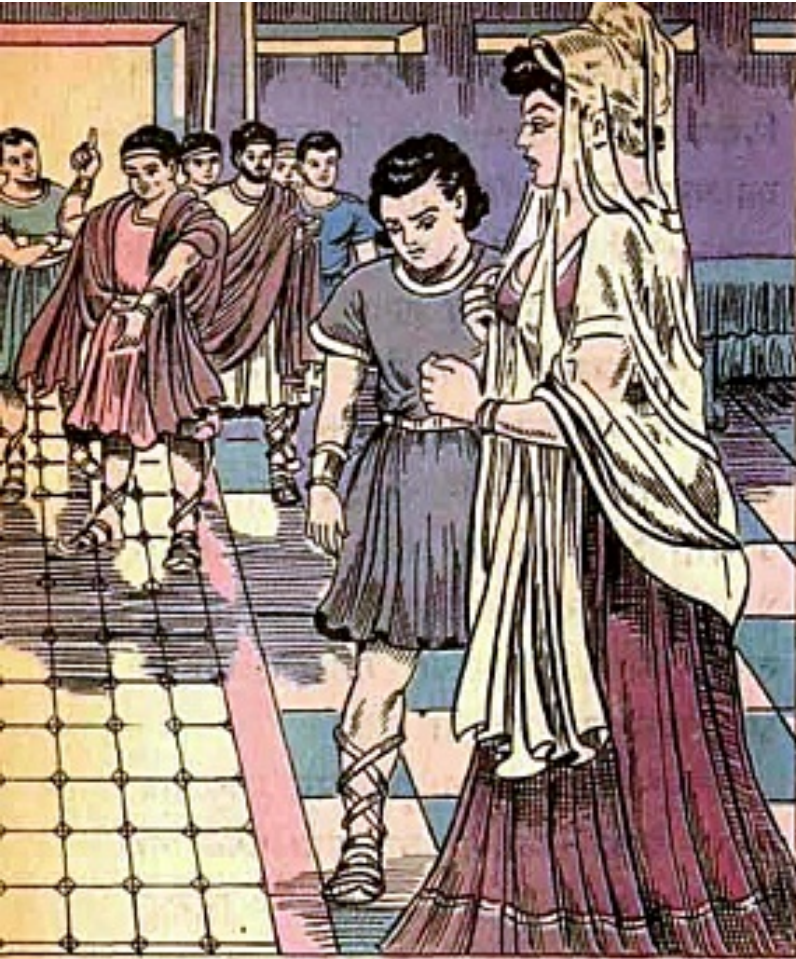
नौकरों की सहायता की ज़रूरत पड़ी। रूपधर से लड़ने उसे ज़बरदस्ती ढ़केलना पड़ा। रूपधर ने अपने आप तर्क किया कि "एक ही घूँसे से इसे परलोक भेज दूँ अथवा एक मामूली मुक्के से गिरा दूँ। अगर एक ही घूँसे से दूत को मार डालूँ तो ये मुझपर संदेह कर सकते हैं। इसलिए अच्छा यही होगा कि चोट छोटी हो।"

दोनों योद्धा जब एक-दूसरे से भिड़ गये तब दूत ने रूपधर के दायें कंधे को चोट पहुँचानी चाही। पर, रूपधर ने उससे पहले ही दूत के गाल पर ज़ोर से ऐसा मारा, जिससे उसके जबड़े की हड्डी टूट गयी। मुँह से खून उगलता हुआ वह नीचे गिर गया और छटपटाने लगा। दर्शक हाथ ऊपर उठाते हुए हँस पड़े और दूत का मज़ाक उड़ाते रहे।

रूपधर ने दूत का पैर पकड़ लिया और बाहर खींच लाया। उसे दीवार से सटाकर बिठा दिया; उसकी लाठी उसी के हाथ में थमा दी और कहा "देखना कि कुत्ते और सुवर अंदर न आवें। समझ लो कि तुम्हीं भिखारियों के सम्राट हो। अच्छा हुआ, बाल-बाल बच गये, नहीं तो तेरी दुर्दशा हो जाती।" फिर इसके बाद रूपधर अपने यथास्थान पर बैठ गया।

सायंकाल पद्ममुखी खुद नीचे चली आयी। आज पहली बार इस समय नीचे आयी थी। उसका सौंदर्य देखते हुए सब खो गये, तन्मय हो गये। उसने अपने बेटे से कहा "बेटे धीरमति, यह सब क्या हो रहा है? तुम भी कितना बदल गये। एक पराया आदमी हमारे घर आया और उसे पिटते हुए तुम देखते रह गये। अगर उस आदमी को कुछ हो जाता तो क्या हमारी इज्ज़त मिट्टी में मिल न जाती?"

"माँ, तुम्हारा क्रोध स्वाभाविक है। ये सब मुझे घेरकर मेरी मति भ्रष्ट कर रहे हैं। मुझे नित्सहाय बना रहे हैं। मैं कर भी क्या सकता हूँ? पर अच्छा ही हुआ कि उस दूत को सही सज़ा मिली।"

दूर खड़े विपुलयोद्धा नामक एक राजकुमार ने कहा "पद्ममुखी, तुम्हारे सौंदर्य को देश की पूरी जनता देखेगी तो सब के सब कल ही आकर यहाँ बस जाएँगे। सभी तुमसे विवाह रचाना चाहेंगे। तुम्हारा सौंदर्य अतुलनीय व अद्भुत है।"

"मेरा सारा सौंदर्य उसी क्षण छिन गया,

जिस क्षण मेरे पति यहाँ से चले गये। हाँ, यह बात सच है कि जाते समय उन्होंने कहा था कि अगर मैं युद्धक्षेत्र में मर जाऊँ तो किसी और से विवाह कर लेना। किन्तु मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरा स्वयंवर इतना अपमानजनक होगा। क्या कभी, कहीं ऐसा हुआ? यह तो रस्म है कि वधुओं के लिए, वर गहने व पशु भेंट के रूप में ले आते हैं। परंतु उसकी सारी जायदाद को यों बैठे-बैठे नहीं खाते'' पद्ममुखी ने नित्संकोच कह दिया।

दुर्बुद्धि ने कहा ''तुमने जो कहा, सच है पद्ममुखी। तुम जिन भेंटों की बात कर रही हो, उन्हें देने के लिए हम सब तैयार हैं। परंतु जब तक हममें से किसी को अपना पति नहीं चुनोगी, तब तक हम यहाँ से नहीं जायेंगे।''

फिर उन्होंने अपने आदमियों को भेजा और मूल्यवान भेंटें मंगवायीं। उन भेंटों को दासियों को सौंपकर पद्ममुखी अपने कमरे में चली गयी।

अंधेरा छाते ही आगे के कमरे में दीप और मशालें जलायीं गयीं। बहुत देर तक वे बदमाश पीते रहे और खलबली मचाते रहे। विपुलयोद्धा ने रूपधर को नौकरी दिलवाने का वचन दिया और कहा ''किन्तु तुम तो अव्वल दर्जे के चोर हो। मेहनत करके कमानेवालों में से नहीं हो।''

''हल चलाने में या हँसिया लेकर घास काटने में मेरी बराबरी का कोई होगा ही नहीं। चाहें तो बाज़ी लगाइये। मालूम हो जायेगा कि हममें से कौन अच्छा मज़दूर है। मेरी नज़र में आप एकदम डरपोक हैं। रूपधर अगर वापस आ जाएँ तो आपकी असलियत खुल जायेगी।''

विपुलयोद्धा नाराज़ हुआ और एक पादा उसपर फेंका। रूपधर बच गया किन्तु वह किसी और को जाकर लगा। वह चिल्लाने चीखने लगा। सब चिल्ला पड़े।

धीरमति ने गंभीर स्वर में कहा ''यह सब क्या हो रहा है? खूब खा-पीकर मस्ती में झूमते हुए पागलों की तरह बरत रहे हो। यह ठीक नहीं। खा-लिया, पी लिया - बस करो यह हंगामा। अब सो जाओ।''

सब चले गये। अब वहाँ रूपधर और धीरमति मात्र रह गये।
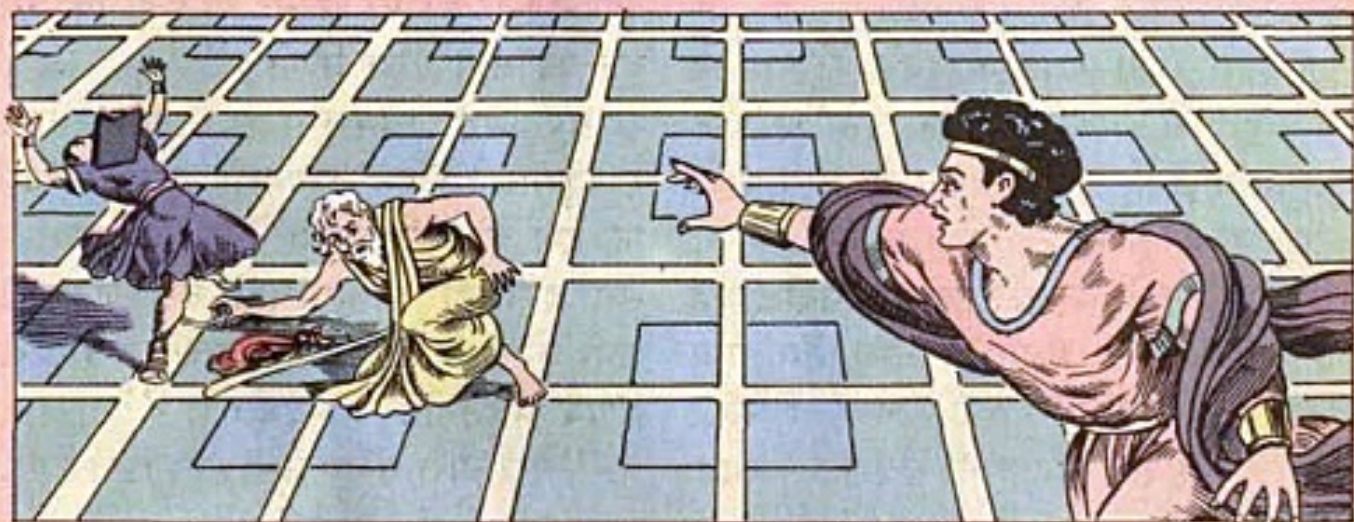
'चन्दामामा' की ख़बरें

इंपोजिशन

विद्यार्थी अक्षर लिखने में अथवा गणित सूत्रों को लिखने में ग़लतियाँ करते हों तो अध्यापक उन्हें सुधारते हैं और उनसे इंपोजिशन कराते रहते हैं। कोयम्बत्तूर के तीस साल के युवक एस. राजा शरीफ़ ने अपने प्रिय नेता राजीव गांधी का नाम अंग्रेज़ी में ८,५०० बार इंपोजिशन लिखा। जानते हैं, यह काम उसने किस पर किया? डाक-घर में ७५ पैसे देने पर प्राप्त होनेवाले मामूली इनलांड लिफ़ाफे में। मतलब इसका यह हुआ कि उसने इस एक लिफ़ाफ़े में ९३,५०० अंग्रेज़ी अक्षरों को समाया। इसे पूरा करने के लिए हर रोज़ दो घंटों के हिसाब से एक पूरा सप्ताह लगा। अगस्त २० को, राजीव गाँधी का जन्मदिन है। उसने इस दिन यह काम शुरु किया। उसने अपने प्रयास के बारे में सोनिया गाँधी को लिखा। इस लिफ़ाफ़े को पाने के बाद राजीव गाँधी की तस्वीर पर उन्होंने हस्ताक्षर किया और उसे भिजवाया।

बिना रुके भरतनाट्य

२७ वर्ष की विद्याचंद्रशेखर नामक युवती विश्राम लिये बिना ७२ घंटों तक भरतनाट्य करती रही और एक नया रिकार्ड स्थापित किया। दिल की बीमारी की वजह से मरे अपने पिता की स्मृति में उसने यह नाट्य-प्रदर्शन किया। विद्या का आशय है कि जनता में दिल की बीमारियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा जगे। अमेरीका, मिचिगन, ट्राय नगरों में संपन्न इस नाट्य-प्रदर्शन को छे सौ लोगों ने देखा। नाच ख़तम होते-होते उसके पैरों में फफोले पड़ गये। वह कमज़ोर पड़ गयी। ''मरे अपने पिता को जिन्दा नहीं कर पाऊँगी। पर मेरी एकमात्र इच्छा है कि आप अपने परिवार सहित सकुशल रहें।'' आँसू बहाती हुई उसने उपस्थित दर्शकों से बताया। सात सालों के पहले वह बिना रुके ४८ घंटे नाची। अब उसे १०,००० डालर मिले, जिन्हें उसने अमेरिकन कान्सर सोसाइटी को दान में दिया।

सिक्कों पर देवताओं के सिर

सिक्कों पर शासकों के चित्रों का अंकन कोई नयी बात नहीं है। कुछ विशिष्ट संदर्भों में प्रमुख नेताओं व सुप्रसिद्ध व्यक्तियों के मुखों का अंकन होता है। हमारे देश में ऐसे सिक्के भी निकले हैं, जिनपर महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, राजीव गाँधी, डा. अंबेदकर जैसे महानों के सिरों का अंकन हुआ है। आस्ट्रेलिया में बहुत काल तक द्वितीय ऐलिजबेत रानी के चित्र वहाँ के सिक्कों पर पाये गये। उस देश में अब उनके सिक्कों पर गणेश, शिव, पार्वती आदि हिन्दू धर्म के देवी-देवताओं के चित्रों का अंकन हो रहा है। पेर्थ की टकसाल में इन सिक्कों का मुद्रण हो रहा है। सिद्धि विनायक के चित्र से सजे २०,००० सोने के सिक्के मुंबई के सुप्रसिद्ध विनायक मंदिर को समर्पित किये गये।

लंदन में हिन्दु मंदिर

लंदन के नेस्डेन प्रदेश में प्रप्रथम एक हिन्दु मंदिर का निर्माण हो रहा है। ६० सीढ़ियों वाले गोपुर का वैशाल्य है २७१५ फुट। इस मंदिर में नारायण (महाविष्णु) की मूर्ति की प्रतिष्ठापना होनेवाली है। इस मंदिर में होंगे २६,३०० शिल्प। मंदिर के निर्माण के लिए आवश्यक चूने के पथ्थर, काले पथ्थर व ठंडक पहुँचानेवाले पथ्थर बल्गेरिया, इटली व भारत से मंगाये गये हैं। राजस्थान के १,५०० शिल्पकारों ने बहुत ही सुंदर शिल्पों को तराशा है। अलावा इसके स्थंभों, दीवारों व ज़मीन पर बिछाने के लिए शिलाएँ भी भेजी गयीं। ये जहाज़ों में इंग्लैण्ड ले जायी गयीं।

विचित्र मुरली

धुन का पक्का विक्रमार्क पुन: पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया। यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता चला गया। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, हर बार तुम असफल रहे, तुम्हारी आशा भंग हुई, फिर भी तुमने अपना हठ नहीं छोड़ा। यह सब देखते हुए मुझे लगता है कि तुम अंत:पुर से अधिक, भयानक इस श्मशान को ही अधिकाधिक चाहते हो। अगर यही सच है तो अवश्य ही तुम्हारा मानसिक स्वभाव बड़ा ही विचित्र है। क्योंकि राजा चाहता है कि मैं सम्राट बनूं। सम्राट बनने की तड़प उसमें भरी हुई होती है। ग़रीब किसान की चाह होती है कि मैं भूस्वामी बनूं। वह इसके लिए दिन-रात परिश्रम करता है। इसमें कोई अस्वाभिविकता नहीं है। यह तो सहज बात है। किन्तु इने-गिने कुछ व्यक्ति अपने

बैताल कथा

बौद्धिक बल अथवा भगवान की कृपा से सफल भी होते हैं। किन्तु इसी सफलता के कगार पर पहुँचते-पहुँचते उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और देखते-देखते यह सफलता उनके हाथों से फिसल जाती है। इस असफलता के कारक वे स्वयं हैं। इसका कारण है, उस समय उनपर हावी जडता अथवा मनोवैकल्य। उदाहरणार्थ मोहनकृष्ण नामक एक युवक की कहानी ध्यान से सुनो।'' कहकर वह यों कहने लगा।

गोकुलपुर में मोहनकृष्ण नामक एक युवक था। उसने गुरुकुल में विद्याभ्यास समाप्त किया और घर लौटा। वह इकलौता बेटा था। दस एकड़ की उसकी हरी-भरी उपजाऊ भूमि थी। उसके पिता दिवाकर ने आशा बाँध रखी थी कि शिक्षा की समाप्ति के बाद बेटा कृषि-कार्यों में उसका साथ देगा। किन्तु उसकी आशा निराशा में बदल गयी। क्योंकि मोहनकृष्ण जब से गुरुकुल से लौटा तब से वह एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठता और दिवा स्वप्न देखा करता था। यों एक महीना बीत गया। पिता दिवाकर अपने बेटे के इस रवैय्ये से ऊब गया। उसने एक दिन मोहनकृष्ण से कहा ''बेटे, अकर्मण्य होकर यों अपना समय व्यर्थ व्यतीत कर रहे हो। कब तक ऐसा करते रहोगे? मैं बूढ़ा होता जा रहा हूँ। खेती के कामों में मेरा साथ दो और कर्मवीर बनो।

पिता की बातें मोहनकृष्ण को नहीं जँचीं। उसने कहा ''पिताजी, कितनी भी मेहनत करें, आख़िर हमें इस खेती से क्या प्राप्त होगा? जहाँ हैं, वही होंगे। हमारी कोई तरक्की नहीं होगी। एक महीने का समय दीजिये। हिमालय के पास के जंगलों में जाऊँगा और तपस्या करूँगा। अपने तपोबल पर किसी महामुनि का आशीर्वाद पाऊँगा। फिर तो हम संपन्न हो जाएँगे। ऐश्वर्य हमें वरेगा।''

दिवाकर को यह जानने में देर नहीं लगी कि गुरुकुल के विद्याभ्यास ने उसके बेटे के मन में आशाएँ उत्पन्न कर दीं। इस स्थिति में वह कर भी क्या सकता था। उसे अपनी स्वीकृति देनी ही पड़ी। उसकी माँ चिंताग्रस्त होकर मौन रह गयी।

दूसरे दिन सबेरे भोजन करने के बाद, रास्ते में खाने के लिए कुछ रोटियों की गठरी बाँधे वह निकल पड़ा। दुपहर तक जंगल में स्थित एक सरोवर के पास पहुँचा। एक बंदर

अकस्मात् पेड़ से नीचे कूदा। उसके हाथ में चाँदी की मूठवाली एक विचित्र मुरली थी। मुरलीकृष्ण आश्चर्य से उस मुरली को देख ही रहा था कि इतने में बंदर ने मुरली ज़मीन पर पटक दी और चलता बना। जाते-जाते वह रोटियों की गठरी को लेता गया। उसने नाराज़ होते हुए पेड़ के ऊपर देखा, पर बंदर वहाँ नहीं था। उसने पड़ी मुरली ली, सरोवर का पानी पिया और चला गया।

जब वह और आगे बढ़ा तो उसने सौ साल के एक वृद्ध मुनि को आते हुए देखा। उसके सिर व लंबी दाढ़ी के बाल पक गये थे। उसकी आँखें ज्ञान-ज्योति से प्रज्वलित हो रही थीं। मोहनकृष्ण श्रद्धा-भाव से उसके पाँवों पर गिर गया।

मुनि ने बड़े प्यार से उसे उठाया और कुछ कहने के प्रयत्न में लगे मोहनकृष्ण से कहा "मुझे सब कुछ मालूम है। यहाँ के किसी मुनि का आशीर्वाद पाकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने आये हो। तुम्हारे हाथ में जो मुरली है, वह कोई साधारण मुरली नहीं है। बहुत ही महत्वपूर्ण है, महिमावान है। बजानेवाले को छोड़कर उसका नाद जो भी सुनता है, निद्रालु हो जाता है। पशु-पक्षी, राक्षस सब इसी स्थिति के अंतर्गत आते हैं। एक और बात सुनो। मनुष्य की इच्छाएँ उसकी शक्ति, उसके सामर्थ्य व उसके बुद्धि-विवेक के अनुरूप ही हों। ऐसा न होने पर उसे अवहेलनाओं व अपमानों का शिकार होना पड़ेगा। मैं तुम्हें सावधान किये देता हूँ।" कहकर मुनि आगे बढ़ गया।
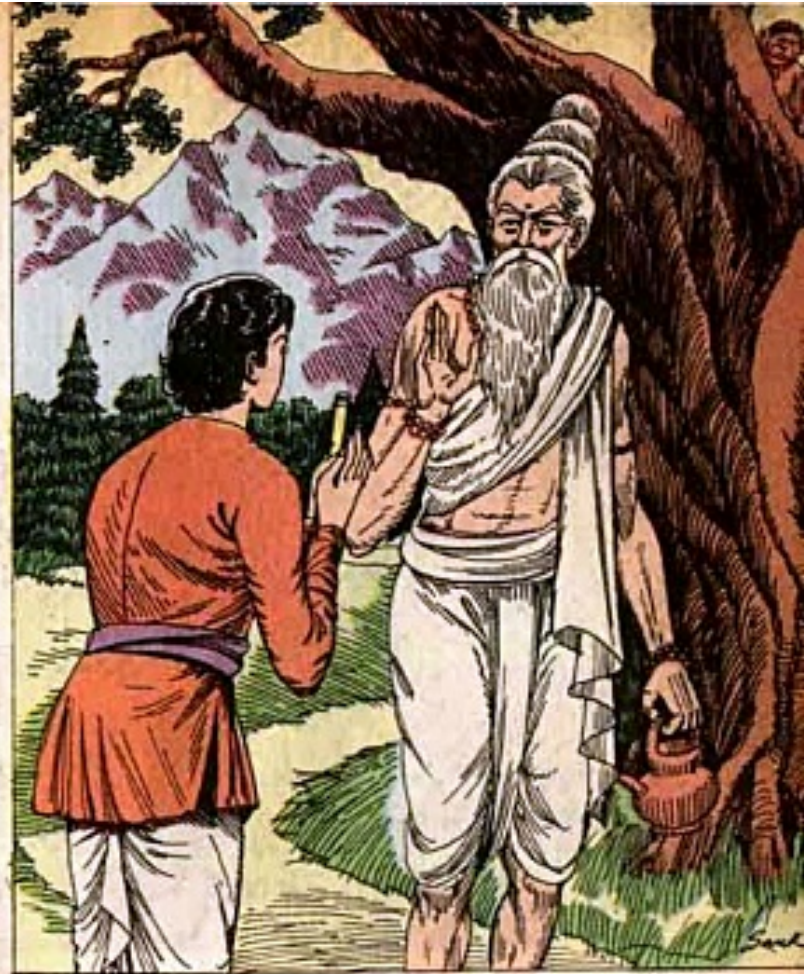
मोहनकृष्ण, मुनि की बातों से संतुष्ट हुआ। वह अपने गाँव की ओर चल पड़ा। दस कोसों की दूरी भी पार न की होगी, उसे शेर की गरज सुनायी पड़ी। एक हिरण का पीछा करता हुआ वह वहाँ आया। डरकर कृष्ण एक पेड़ पर चढ़ गया। इतने में महिमामयी मुरली की याद आयी। मुरली बजाने लगा। शेर और हिरण दोनों ज़मीन पर सो गये और गाढ़ी नींद में चले गये। थोड़ी देर तक वह मुरली बजाता रहा और फिर जब थक गया तो मुरली बजाना बंद कर दिया। मुरली-नाद बंद होते ही शेर और हिरण दोनों चौंककर जाग पड़े। दौड़ते हुए हिरण का पीछा करने लगा शेर।

इतने में पास ही के बरगद के पेड़ से एक राक्षस, मोहनकृष्ण के सामने कूदा।

उसे देखकर भय से काँपते हुए मोहनकृष्ण से उस राक्षस ने कहा "अरे, मुझे बड़ी भूख लगी है। काँपते हुए अपना समय व्यर्थ मत करो। बेहोश हो जाओगे तो मैं तुम्हें खाकर अपनी भूख मिटा लूँगा।"

मोहनकृष्ण ने भाँप लिया कि इसके पीछे ज़रूर कोई राज़ है तो उसने साहस बटोरा और पूछा "मैं बेहोश नहीं हो जाऊँगा तो क्या मुझे खा नहीं सकोगे?"

राक्षस ने लंबी साँस खींचते हुए कहा "क्या बताऊँ। एक बार मैंने जंगली भैंस को खा लिया। फिर उसकी हड्डियाँ दूर फेंकीं। वे एक मुनि के आश्रम में जा गिरीं। मुनि आप से बाहर हो गये और शाप दिया कि होश की हालत में किसी भी प्राणी को खाओगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।"

कृष्ण को अब अपनी मुरली की याद आयी। वह उसे अपने ओंठों पर रखने ही वाला था, राक्षस ने उसे खींच ली और घुमा-फिराकर उसे खूब देखता रहा। 'अरे, यह तो चाँदी की मूठ की है' कहकर बजाने लगा।

मुरलीकृष्ण ने अपने कान बंद कर लिये, जिससे नाद सुनायी न पड़े। राक्षस ने जब यह देखा तो नाराज़ हो गया और बोला "अपमान, घोर अपमान। मैं बजा रहा हूँ तो तुम कान बंद कर रहे हो। मैं भी देखता हूँ कि तुम कितना अच्छा बजाते हो।" कहकर उसने मुरली, मुरलीकृष्ण पर फेंकी।

अपने बच जाने की खुशी में, मन ही मन भगवान का स्मरण करते हुए उसने मुरली बजायी। 'अद्भुत' कहता हुआ राक्षस ज़मीन पर गिर गया और खर्राटे लेता हुआ सो गया।

मौक़ा पाकर वह वहाँ से भागने लगा। राक्षस तुरंत जागा और चिल्लाने लगा "ठहरो, ठहर।" लंबे-लंबे डग भरता हुआ वह उसका पीछा करने लगा।

इतने में एक सुंदर पालकी मोहनकृष्ण के सामने आयी। चार कहार पालकी ढो रहे थे। दस सैनिक घोड़ों पर बैठे साथ-साथ आ रहे थे। उन्हें देखकर राक्षस ने ऊँचे स्वर में कहा "कितना भाग्यशाली हूँ। एक का पीछा किया तो इतने आदमी मिल गये।" कहता हुआ वह ठठाकर हँस पड़ा।

राक्षस की हँसी सुनकर एक सुंदरी ने पालकी का परदा हटाया। मेघों के पीछे से निकले चंद्रमा की तरह उसका मुख

प्रकाशमान व शोभायमान था। उसे देखकर मोहनकृष्ण को लगा "शायद सुँदरता इसी को कहते हैं। शादी करूँगा तो इसी से करूँगा।"

राक्षस को देखकर सैनिक व सुँदरी भय से काँपने लगे। राक्षस भी इस बात पर बेहद खुश था कि इतने सब एक साथ मिल गये। फूँक-फूँककर क़दम रखता हुआ वह आगे बढ़ने लगा। पगडंडी के बगल के एक कुएँ के पास जब वह आ चुका तो मुरलीकृष्ण ने बाँसुरी बजाना शुरु कर दिया।

बाँसुरी की ध्वनि सुनते ही राक्षस "अद्भुत, महा अद्भुत।" कहता हुआ आगे बढ़ा और निद्रावस्था में कुएँ में गिर पड़ा। इसी समय कहार, सैनिक व सुँदरी भी सो गये।

मुरलीकृष्ण ने मुरली बजाना बंद कर दिया। फ़ौरन सब के सब जाग पड़े। कुएँ में गिरे राक्षस का पैर टूट गया और वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। आश्चर्य में डूबे सभी को मुरलीकृष्ण ने विषय बताया और उनसे कहा "वह राक्षस अब कुएँ से बाहर नहीं आ सकेगा। क्या मैं जान सकता हूँ कि आप कौन हैं और कहाँ जा रहे हैं?"

सैनिकों में से एक ने कहा "महाशय, यह सब हमारा दुर्भाग्य है। हम सूर्यगिरि राज्य के हैं। हमारे पड़ोसी राज्य मकरगिरि के राजा ने हमारे राज्य-पर आक्रमण किया। एक सप्ताह से युद्ध ज़ोरों से हो रहा है। हज़ारों की संख्या में हमारे सैनिक मारे गये। हमारी हार निश्चित है। इसलिए रहस्य मार्ग से निकलकर अपनी युवरानी को बचाने के उद्देश्य से निकले हैं। जंगल में छिपने के लिए इस तरफ से गुज़र रहे हैं।"

मोहनकृष्ण ने उन्हें अपना परिचय दिया और कहा "मुझे महाराज के पास ले चलिये। तक्षण ही उनसे युद्ध-तंत्र के बारे में बातें करनी हैं। मुझे हमारी सेना के जीतने का उपाय मालूम है।"

युवरानी की अनुमति लेकर सैनिक राजधानी की और लौटे। एक सैनिक ने मुरलीकृष्ण को घोड़े पर अपने पीछे बिठा लिया। प्रात:काल वे राजधानी पहुँचे। रहस्य मार्ग से होते हुए वे क़िले के अंदर आये।

सैनिकों ने मोहनकृष्ण को राजा के शयनकक्ष के बाहर खड़ा कर दिया। युवरानी अंदर गयी। राजा आसन पर चिंताग्रस्त बैठा

सामने आते ही राजा ने मोहनकृष्ण को ग़ौर से देखा और कहा "सुना कि तुम हमसे कोई युद्ध-तंत्र बताना चाहते हो? कहो, वह क्या है?"

युवरानी की सुंदरता पर मुग्ध मोहनकृष्ण की प्रबल इच्छा थी कि उससे विवाह करूँ। किन्तु वह इस प्रस्ताव को राजा से बताने से सकुचा रहा था। इसलिए पहले उसने अपनी मुरली की महिमा का वर्णन किया और फिर कहा "महाराज, युद्ध में अवश्य ही मेरी ही जीत होगी। इसके बदले में बस, मेरी एक इच्छा पूरी कीजिये। मुझे वचन दीजिये कि मेरी इच्छा की पूर्ति होगी।"

क्षण भर के लिए मौन धारण करने के बाद राजा ने प्रसन्नतापूर्वक कहा "मोहनकृष्ण, शत्रु राजा पर तुम्हारी जीत हमारी जीत होगी। इस जीत का मतलब है कि तुम मेरी, सूर्यगिरि राज्य की, मेरे परिवार की और मेरे नागरिकों की रक्षा कर रहे हो। अपने कुलदेवता के नाम पर वचन देता हूँ कि तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।"

दूसरे दिन जैसे ही युद्ध प्रारंभ हुआ, मोहनकृष्ण युद्धभूमि में एक रथ पर आसीन होकर महिमामयी मुरली बजाने लगा। सूर्यगिरि महाराज, सेनाधिपति और सैनिकों ने मोहनकृष्ण के कहे अनुसार अपने कानों में रुई भर रखी थी। इसलिए मुरली नाद का उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। किन्तु मकरगिरि का राजा, सैनिक, सेनाधिपति सब के सब सो गये। इस मौक़े का फ़ायदा उठाकर सूर्यगिरि की सेना ने शत्रुओं का संहार कर दिया। सूर्यगिरि महाराज ने,

था। पुत्री को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसके कुछ पूछने के पहले ही युवरानी ने पूरा वृत्तांत सविस्तार बताया और कहा "मोहनकृष्ण नामक इस युवक का दावा है कि युद्ध में जीतने का मार्ग वह सुझा सकता है। आपकी अनुमति मिले तो वह अंदर आयेगा। आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में बाहर खड़ा है।"

सब सुनने के बाद राजा ने कहा "एक सामान्य नागरिक मुझसे युद्ध-तंत्र पर चर्चा करना चाहता है? दावा कर रहा है कि वह हमें विजय-मार्ग सुझा सकेगा? असंभव। किन्तु तुम्हारी बातों से लगता है कि वह वीर-शूर है। तुम सबको उसने राक्षस से बचाया। हो सकता है, वह सचमुच ही महावीर हो। उसे अंदर आने की अनुमति है।"

मकरगिरि महाराज को बंदी बनाकर जेल में डाल दिया।

उस दिन शाम को मोहनकृष्ण के सम्मान में एक विराट सभा हुई, जिसमें राजा, आस्थान पंडित, नगर के प्रमुख व मंत्री आदि ने उसकी भरपूर प्रशंसा की। उसे महावीर व रक्षक कहकर प्रशंसा के पुल बाँधे गये। सिर्फ़ एक सेनापति था, जो मौन रहकर यह सब तमाशा देखता जा रहा था। मोहनकृष्ण ने यह देखा तो वह घबरा गया। उसके मन में खलबली मच गयी। राजा ने वहाँ उपस्थित सब लोगों से अपने वचन का भी विवरण बताया और उसने मोहनकृष्ण से पूछा "बोलो, तुम्हारी वह एकमात्र इच्छा क्या है? मैं अपने वचन से नहीं मुकरूँगा। तुम्हारी इच्छा अवश्य ही पूरी करूँगा।"

मोहनकृष्ण ने राजा को प्रणाम करके कहा "महाराज, क्षमा कीजिये। मेरी इच्छा क्या है, आपको कल बताऊँगा।" कहकर वह अतिथि मंदिर चला गया।

दूसरे दिन सूर्योदय के पहले ही वह जागा और उस महिमामयी मुरली के दो टुकड़े करके उसे क़िले की खाई में फेंक दी और अपने ग्राम की ओर चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर राजा विक्रमार्क से कहा "राजन्, मोहनकृष्ण ने जब जंगल में पहली बार युवरानी को देखा, तब उसकी सुँदरता पर रीझ गया और निश्चय कर लिया कि विवाह करूँगा तो इसी सुँदरी से करूँगा। युद्ध में अपना सहयोग देने के पहले उसने राजा से कहा भी था कि मेरी एक इच्छा की पूर्ति हो। यह उसकी एक शर्त भी थी। किन्तु विजय के बाद भरी सभा में जब राजा ने उससे अपनी इच्छा को व्यक्त करने के लिए कहा तो कल बताने का बहाना बनाकर, बात टालकर गाँव चला
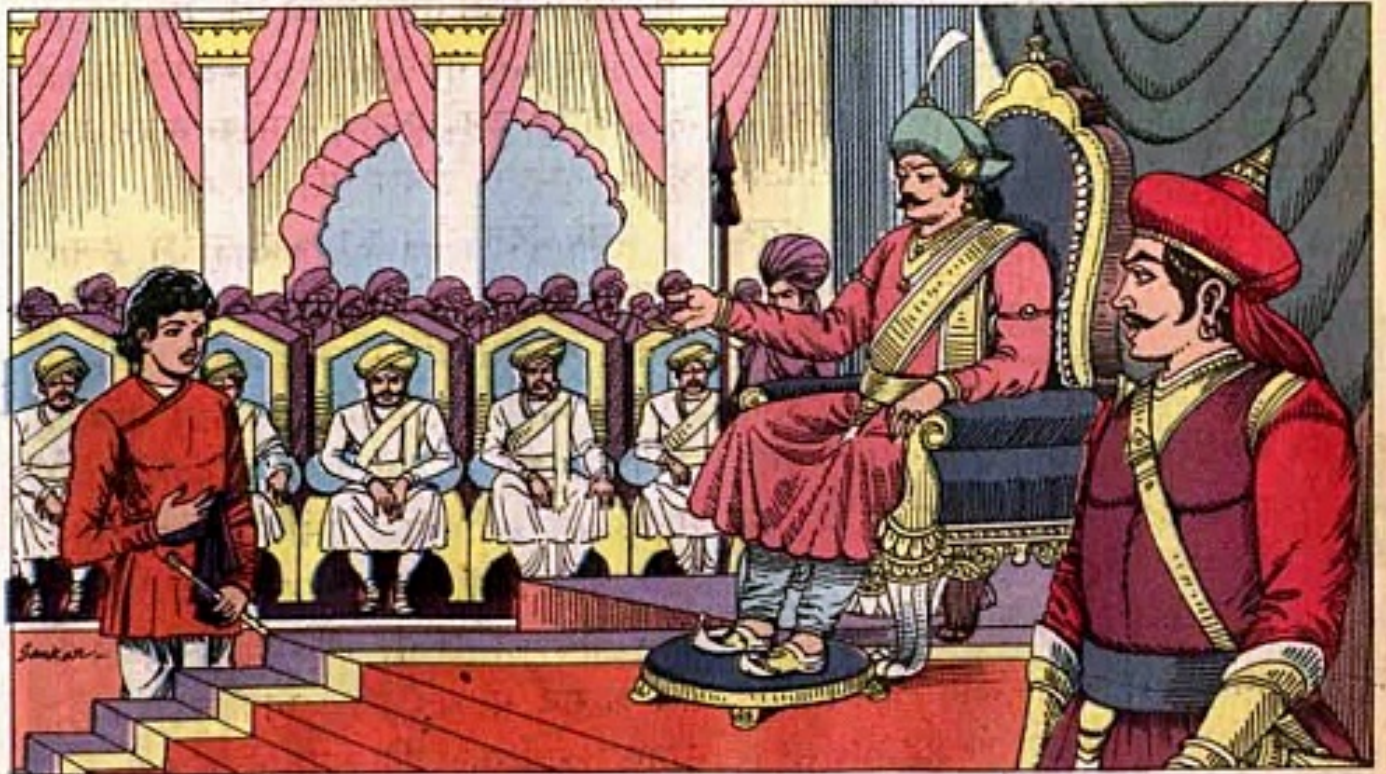
गया। उसने ऐसा क्यों किया? जाने के पहले मुरली को तोड़कर क़िले की खाई में क्यों फेंक दिया। उसकी इच्छा की पूर्ति के आख़िरी क्षण में उसने ऐसा व्यवहार क्यों किया? मुझे तो लगता है कि जडता व मानसिक दुर्बलता के वशीभूत होकर उसने ऐसा किया होगा। मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।''

विक्रमार्क ने कहा ''यद्यपि मोहनकृष्ण ने गुरुकुल में विद्या पायी, किन्तु जीवन की वास्तविक समस्याओं व आवश्यकताओं से वह अपरिचित था। मुनि के आशीर्वाद पाने उसका जंगल में जाना इसकी पुष्टि करता है। जंगल में दिखायी पड़े महामुनि को यह सत्य मालूम था, इसीलिए उसने मोहनकृष्ण को सावधान करते हुए कहा भी कि उसकी इच्छाएँ उसके शक्ति-सामर्थ्य के अनुरूप हों। तभी उसे ज्ञात भी हुआ कि बंदर की दी हुई मुरली असाधारण महिमाओं से भरी हुई है। सूर्यगिरि की युवरानी को देखने के बाद उसके मन में, उससे शादी करने की इच्छा जगी। वह चाहता तो युद्ध के पहले ही राजा से अपनी इच्छा प्रकट करके उससे वचन ले सकता था। किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। क्योंकि मुनि की चेतावनी उसे याद थी। भरी सभा में जब सब के सब उसकी प्रशंसा के पुल बांध रहे थे तब एकमात्र सेनापति मौन खड़ा था। उसका मुख भावहीन था। इससे वह जान गया कि उसकी वीरता, शक्तिसामर्थ्य किस स्तर के हैं। मंत्र-तंत्रों या किन्ही महिमाओं के बल पर शत्रुओं को निद्राग्रस्त करके, उनके गले काटना न ही वीरता है, न ही युद्ध-धर्म है। वह यह भी जान गया कि मैं युवरानी से विवाह रचाने के योग्य नहीं हूँ। उसे मालूम भी हो गया कि इस महिमामयी मुरली से अनर्थ होगा, इसीलिए उसने मुरली तोड़ डाली और खाई में फेंक दी। अब तो तुम्हें स्पष्ट हो गया होगा कि उसके व्यवहार में न ही कोई जडता है अथवा न ही उसने मानसिक दुर्बलता के वश होकर ऐसा किया। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि उसमें संपूर्ण ज्ञान ने स्थान पा लिया है।''

राजा का यों मौन-भंग होते ही बेताल शव सहित अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

(आधार - राममनोहर कत्याल की रचना)

मलबार तट के साथ-साथ

शब्द : मीरा नायर ◆ चित्र : गोपकुमार

मलबार तट के साथ-साथ आगे बढ़ते हुए हम पहुंचते हैं *कोडुंगल्लूर* अथवा क्रैंगनोर, जो केरल के सबसे पुराने बंदरगाहों में से एक है और प्राचीन काल में मुज़िरिस कहलाता था.

मुज़िरिस में फीनीशिया, मिस्र, अरबस्तान, यूनान और रोम के समुद्री व्यापारी आया करते थे. अपने साथ वे चोगे, सुरमा, तांबा, पीतल के बरतन और शराब लाते थे तथा उनके बदले में यहां से काली मिर्च, मलबारी बंदर, बाघ, तोते और हाथी ले जाते थे.

आज से दो हजार साल पहले कोडुंगल्लूर में ही पहले पहल यहूदियों ने भारत में पदार्पण किया. ईसा के मुख्य शिष्यों में से एक, संत थामस ५२ ई. में केरल आये और उन्होंने ईसाई धर्म का प्रवेश भारत में कराया. भारतीयों द्वारा निर्मित पहली मस्जिद कोडुंगल्लूर में ही चेर वंश के अंतिम राजा चेरमान् पेरुमाल् ने ८०० ई. में बनवायी. चेरमान् ने इस्लाम कबूल कर लिया था. यह मस्जिद ढलवां छतवाली एक साधारण इमारत है. इसमें मीनार नहीं बनी है और इसका मुंह पूर्व की ओर है, न कि आम नियम के अनुसार मक्का की ओर. केरल के मंदिरों की तरह पीतल का एक विशाल दीपस्तंभ यहां निरंतर प्रज्वलित रहता है.

पहली मस्जिद

कोडुंगल्लूर भद्रकाली के मंदिर के कारण हिंदुओं के लिए भी पवित्र है. देवी भद्रकाली शक्ति का एक रूप हैं और उन्हें केरल के समुद्रतट की रक्षिका माना जाता है.

सन १३४१ में पेरियार नदी में बड़ी भयंकर बाढ़ आयी, जिससे *कोडुंगल्लूर* बंदरगाह में मिट्टी भर गयी और वह जहाजों के आने-जाने के लिए बेकार हो गया. नदी ने अपना पाट बदल लिया और नयी जगह समुद्र में गिरने लगी, जिससे कोचि बंदरगाह का निर्माण हुआ.
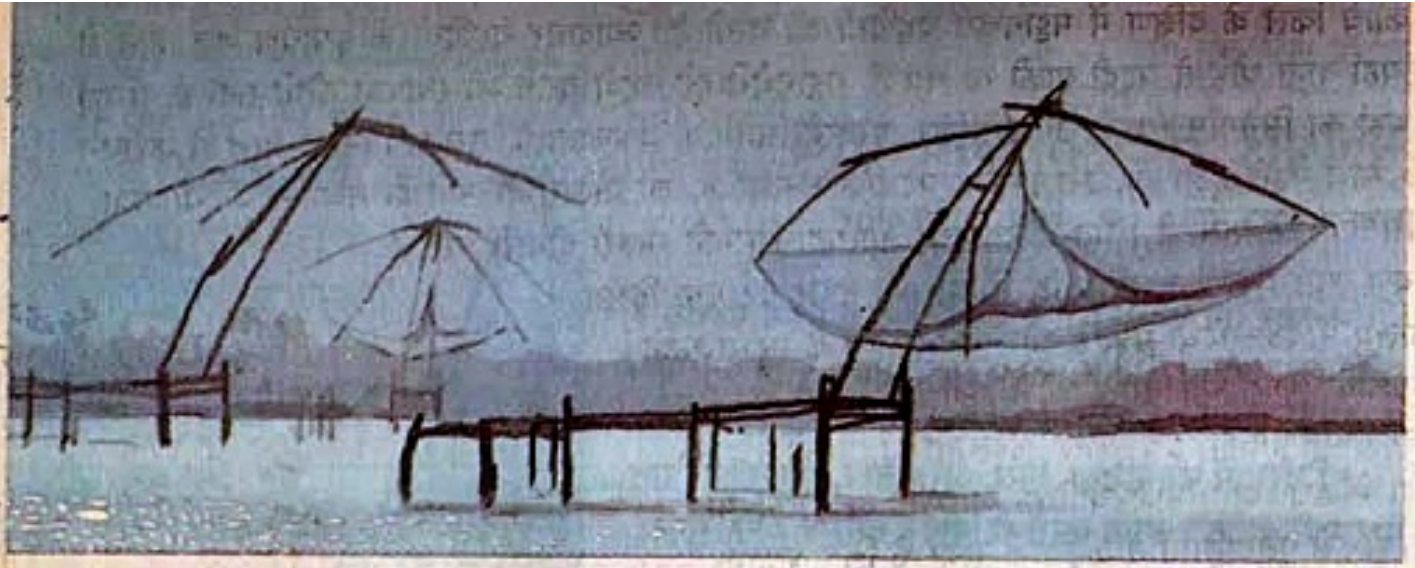
कोचि बंदरगाह की गिनती विश्व के सर्वोत्तम बंदरगाहों में होती है और उसे 'अरब सागर की रानी' कहा जाता है. इसमें जहाज़ मानसून के थपेड़ों से पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं.

कोचि छोटे-छोटे द्वीपों और मुख्यभूमि पर बसा हुआ है. इनमें से तीन द्वीप ये हैं – विलिंग्डन द्वीप, *बोलघाट्टी* द्वीप तथा *वाईपिन* द्वीप (जहां मछली पकड़ने के चीनी जाल हवा में लहराते देखे जा सकते हैं).

चीनी मछली-जाल का परिचय केरलवासियों को चीन के मंगोल सम्राट् कुबलाई खां के दरबार से आये व्यापारियों ने कराया था. ये विशाल जाल ऊंची बल्लियों के सहारे समुद्र में लटकाये जाते हैं. ये बल्लियां अपनी टेकन पर घूमती रहती हैं. बल्ली पर बंधी जलती लालटेन की रोशनी से खिंच कर मछलियां जाल में चली आती हैं. बाद में जाल को पानी में से निकालने के लिए बल्ली के दूसरे सिरे पर कम से कम छह-सात आदमियों को अपनी ताकत लगानी पड़ती है.

बंदरगाह के किनारे मुख्यभूमि पर निर्मित कोचि किले को भारत में यूरोपीयों की सबसे पहली बस्ती समझा जाता है. यहां का संत फ्रांसिस का गिरजा पुर्तगालियों ने १५१० ई. में बनाया और यह भारत में मौजूद सबसे पुराना यूरोपीय गिरजाघर है. वास्को द गामा की मृत्यु १५२४ ई. में कोचि में ही हुई और उसका शव इसी गिरजे में दफनाया गया. गिरजे के दक्षिणी पार्श्व में पीतल के चमचमाते जंगले से घिरा उसकी कब्र का शिलालेख आज भी देखा जा सकता है. मगर उसके बेटे उसके शव को १५३८ ई. में ही पुर्तगाल ले गये थे.

संत फ्रांसिस का गिरजा

कोचि किले के दक्षिण में मट्टानचेरी यहूदियों की बस्ती है. ज्यादातर यहूदियों के इस्राइल चल जाने से अब यहां बहुत थोड़े-से यहूदी बाकी रह गये हैं. मट्टानचेरी की यहूदी बस्ती की स्थापना चौथी सदी ई. में हुई थी. यहां का सिनेगॉग (यहूदी उपासनागृह) 'परदेसी सिनेगॉग' कहलाता है. उसका निर्माण आज से करीबन ४३० साल पहले हुआ था. इस इमारत पर एक घंटाघर है, जो अठारहवीं सदी के मध्य में बनाया गया.

सिनेगॉग के पास ही स्थित है मट्टानचेरी प्रासाद, जिसकी भीतरी दीवारों पर रामायण तथा महाभारत के प्रसंग चित्रित हैं. महल का एक हिस्सा संग्रहालय में बदल दिया गया है और उसमें कोचि के महाराजाओं की पोशाकें, पालकियां वगैरह चीजें रखी हुई हैं.

पहले यह प्रासाद 'डच पैलेस' कहलाता था, हालांकि इसके निर्माण में डचों यानी हालैंडवासियों का कोई हाथ नहीं था. असल में इसे पुर्तगालियों ने कोचि के राजा के लिए बनाया क्योंकि राजा का महल उन्होंने नष्ट कर दिया था. मगर बाद में डचों ने इस महल का जीर्णोद्धार किया और इसकी छत को ठेठ डच ढर्रे की ढलवां छत का रूप दिया.
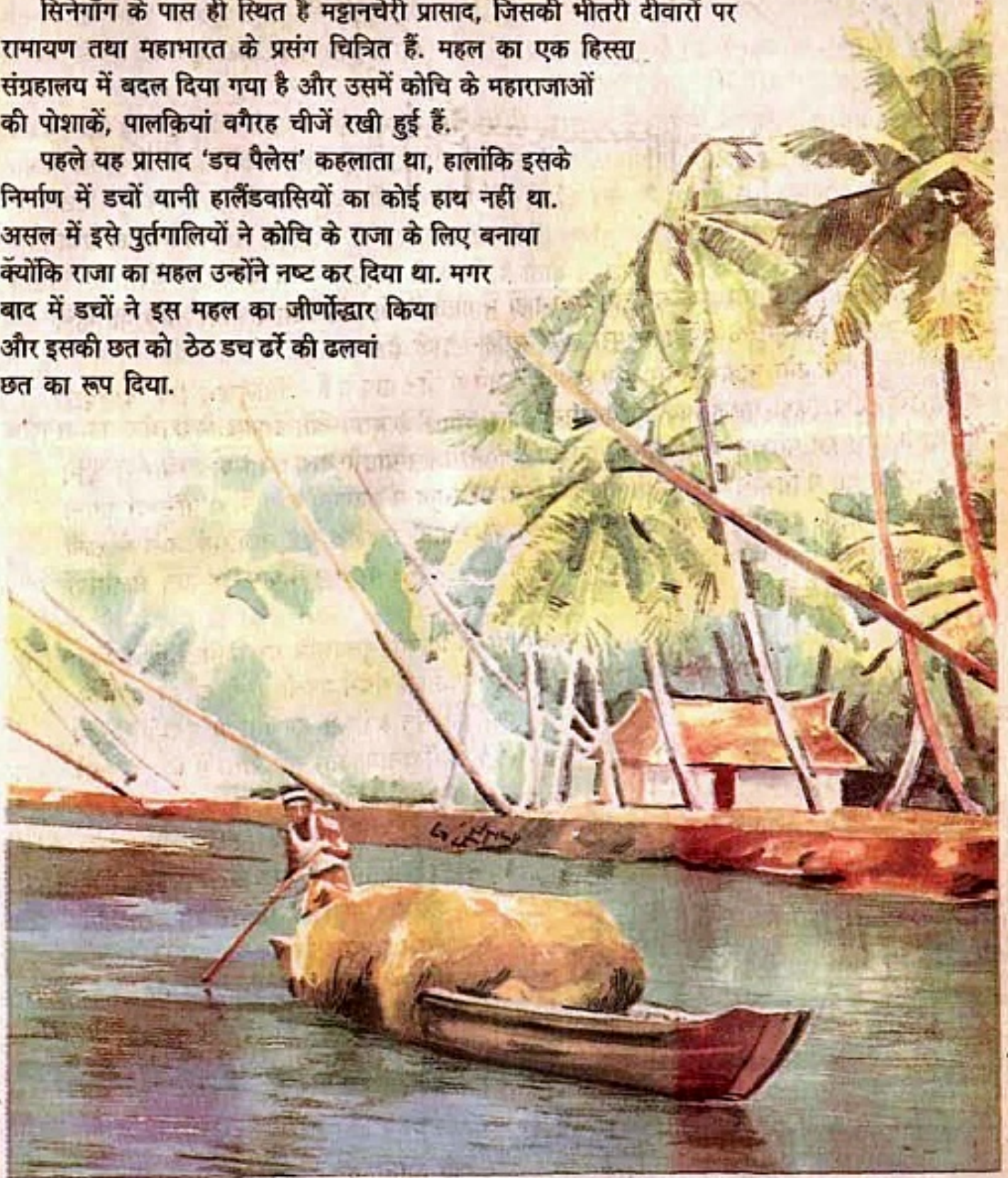
मट्टानचेरी प्रासाद का फ़र्श ओपदार काले संगमरमर से बना जान पड़ता है. लेकिन असल में वह बना है नारियल के जले हुए खोलों, कोयला, चूना, विविध बूटियों के रस और अंडों की सफेदी के मिश्रण से. फर्श बनाने की यह कला बिसरायी जा चुकी है और अब इसके बिरले ही नमूने देखने को मिलते हैं.

कोचि से दक्षिण कोल्लम् तक सारे रास्ते में समुद्री झीलों और नालों की अटूट शृंखला देखने को मिलती है. कोचि से अलप्पुझा तक फैली हुई वेम्बनाड झील ७९ वर्ग कि.मी. विस्तृत है और केरल की सबसे विशाल समुद्री झील है.

हर साल अगस्त-सितंबर के महीनों में अलप्पुझा के तट पर 'चुंडन् वल्लम्' यानी सर्पनौका-दौड़ देखने दर्शक उमड़ पड़ते हैं. जब चोंचनुमा अग्रभाग और फौलादी गलही वाली १३० फुट लंबी सर्पनौकाओं को सौ-सौ मल्लाह भयंकर रूप से तेज चाल से दौड़ाते हैं, तब दर्शकों की तालियों और वाहवाही से आसमान गूंज उठता है. इनमें से सबसे मशहूर प्रतियोगिता है – 'नेहरू ट्रोफी नौका-दौड़', जो हर साल १५ अगस्त को प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की केरल-यात्रा की याद में होती है. नेहरूजी की उस यात्रा के दौरान केरल के 'धान के कटोरे' कुट्टनाड के लोगों ने अलप्पुझा शहर के बाहर उनके मनोरंजन के लिए सर्पनौका-दौड़ आयोजित की थी. नेहरू इतने पुलकित हो उठे थे कि सुरक्षा-व्यवस्थाओं की परवाह न करके विजेता नौका में सवार हो गये और अलप्पुझा की नौका-जेटी तक उसमें गये.

दिल्ली लौट कर नेहरूजी ने एक ट्रोफी केरल के उस समय के मुख्यमंत्री के पास भेजी और यह अनुरोध किया कि हर साल इस दिन सर्पनौका-दौड़ हुआ करे और जीतनेवाली नाव को यह ट्रोफी दी जाए.
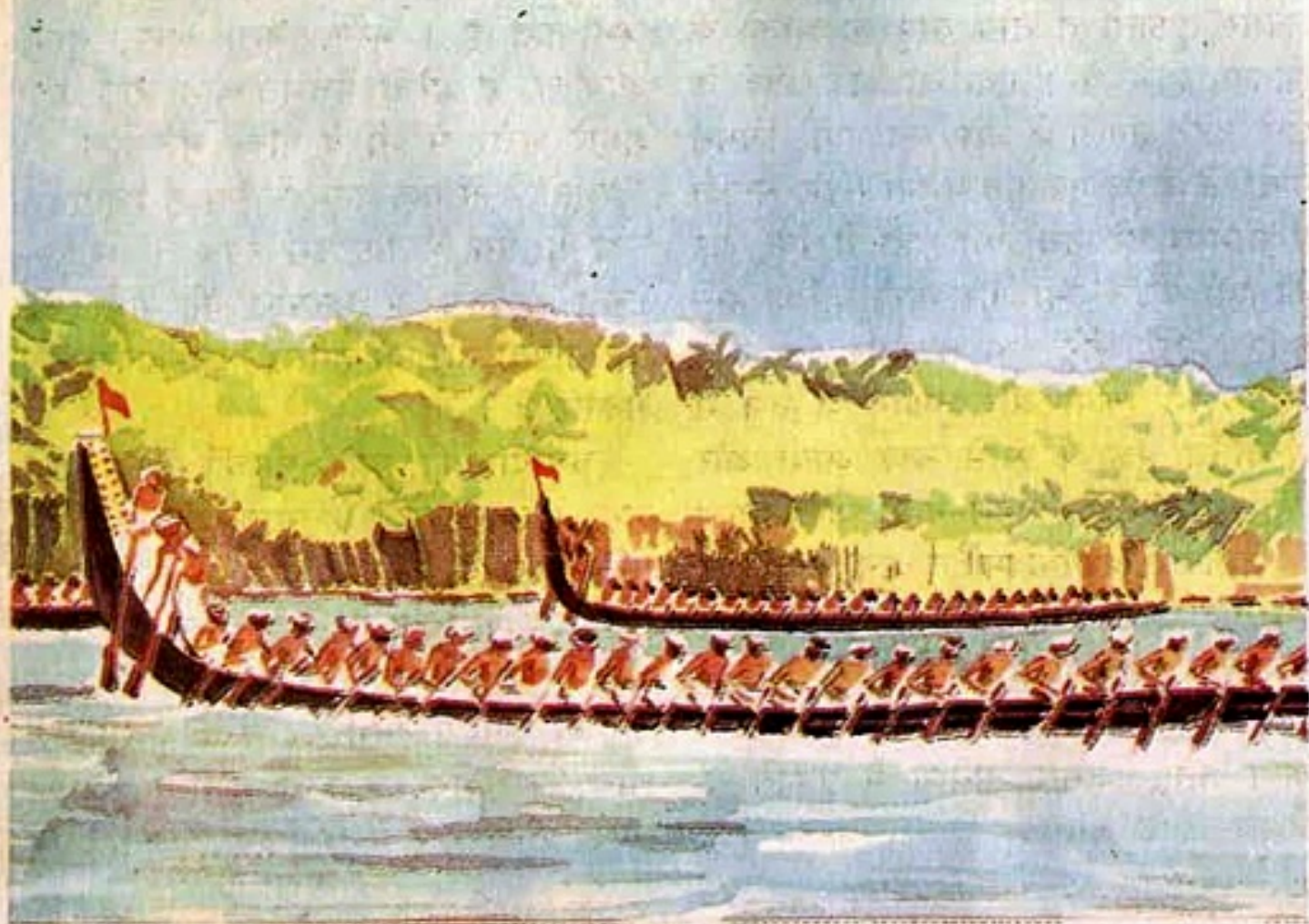
पंचभूतों का सुंदरकांड

रतलाम प्रांत की ज़मींदारी के कुछ गाँव समुद्र-तट के पास ही थे। इसलिए वे गाँव अक्सर तूफ़ानों व तीव्र वायु के झोकों के शिकार होते थे। एक बार इर्द-गिर्द के छोटे-छोटे जंगलों में आग लग गयी, जिससे गाँवों को बहुत नुक़सान पहुँचा। इस आफ़त से ग्रामीण पूरे उबरे भी नहीं थे कि ज़ोर की हवा चलने लगी और भारी बारिश होने लगी। धीरे-धीरे हवा व बारिश ने तीव्र रूप धारण किया और तूफ़ान के रूप में परिवर्तित हुआ। इससे बाढ़ आयी और बहुत-से गाँवों को तहस-नहस कर दिया।

ज़मींदार अशोकवर्मा ने उन गाँवों का पुनर्निर्माण किया और ग्रामीणों को आवश्यक सहायता पहुँचायी। वह चाहता था कि ग्रामीणों से चर्चाएँ करके ऐसा प्रबंध किया जाए, जिससे भविष्य में प्रकृति के भीभत्स रोके जाएँ।

उस समय आस्थान के ज्योतिषी ने कहा "प्रभू, प्रकृति के इस वैपरीत्य पर हमारा वश नहीं है। भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, ये पाँचों पंचभूत कहे जाते हैं। हमारे शरीर में भी ये पाँचों भूत हैं। इन पंचभूतों में से एक वायु का पुत्र है हनुमान। मेरी प्रार्थना है कि इस बाढ़ के स्मृति-चिन्ह के रूप में हनुमान की मूर्ति की प्रतिष्ठापना हो, जो हमारा रक्षा-कवच बन सकता है।"

ज़मींदार को, ज्योतिषी की सलाह सही लगी। उसने तुरंत हनुमान की मूर्ति की प्रतिष्ठापना के लिए आवश्यक स्थल चुना। उसने आदेश दिया कि उस स्थल पर फल-वृक्ष, पुष्प-पौधे रोपे जाएँ और उसे सुंदर वन के रूप में सुसज्जित करें। बहुत ही शीघ्र, ज़मींदार का चुना हुआ वह स्थल सुंदर वन के रूप में सुसज्जित हुआ। वृक्ष-

वेंकटाचल शर्मा

संपदा के साथ-साथ जल-संपदा की भी पर्याप्त मात्रा में वृद्धि हुई। इस वन को देखनेवाले मुग्ध होकर देखते ही रह जाते थे। अब प्रकृति- भीभत्स के स्मृति-चिन्ह के रूप में खड़ी की जानेवाली हनुमान की मूर्ति का काम ही शेष रह गया।

कुछ हफ़्तों में मूर्ति की प्रतिष्ठापना का मुहूर्त आ ही गया। गाँवों से सब लोग उस अवसर पर वहाँ आये। अनेकों प्रकार के वृक्षों व पुष्पों से अति मनोहर दीखनेवाले उस वन में हनुमान की मूर्ति की प्रतिष्ठापना हुई।

बहुत से गायकों व कवियों ने हनुमान पर कविताएँ रचीं और सुनायीं। सामान्य जनता ने भजन व कीर्तन गाये। इस कार्यक्रम के दौरान ज़मींदार ने कहा "आज सुंदरकांड का पारायण कराएँगे। हो सके तो सब लोग अपने साथ रामायण भी ले आइये।"

उस समय एक व्यक्ति ज़ोर-ज़ोर से रोता हुआ बोला "जो होना है, होकर रहेगा। उसे कोई टाल नहीं सकता। भगवान बड़ा ही अन्यायी व अत्याचारी है। सुंदरकांड के पारायण मात्र से यह समझना ग़लत है कि हनुमान प्रसन्न होगा। मैंने रामायण का सुंदरकांड खंड-काव्य के रूप में रचा है। किन्तु हाल ही में जो बाढ़ आयी है, उसमें उसके साथ-साथ घर-बार सब कुछ बह गया है।" कहकर वह चिल्लाने लगा।

ज़मींदार ने उसे पास बुलाया और कहा "प्रकृति पंचभूतों का मिश्रण है। इन पंचभूतों में से एक जल है। उसके प्रलय के सम्मुख हमारी क्या हस्ती? अगर आपने सचमुच भक्तिपूर्वक सुंदरकांड की रचना की हो उसे व्यक्तिगत नष्ट न समझियेगा। कहते हैं कि लोक कवियों का परिवार है। सुंदरकांड को रचने के लिए आवश्यक सुविधाएँ मैं आपको दिलाऊँगा। पंचभूतों में से एक उस वायु के पुत्र हनुमान की ऐसी स्तुति कीजिये, जिससे मुझे तृप्ति मिले।"

ज़मींदार की बातें सुनकर वह व्यक्ति लज्जित होते हुए बोला "प्रभू, मैं भूल ही गया कि मैं एक कवि हूँ। रामायण की रचना का आरंभ करके सुंदरकांड तक पूरा किया। कहते हैं कि सुंदरकांड के पठन से सब कष्ट दूर हो जाते हैं और प्रतिष्ठा व यश प्राप्त होते हैं। मैंने यद्यपि सुंदरकांड की रचना की परंतु अपनी रचना के साथ-साथ सब कुछ खो चुका। इसी दुख में मैंने

भगवान की निंदा की । मुझे क्षमा कीजिये । यह वन मधुवन के समान हो । पंचभूतों में से चौथे भूत की संतान सुंदररूप - पाँचवें भूत तथा दूसरे भूत की दूरी को पार करके, प्रथम भूत की संतान को धैर्य देकर, तृतीय भूत से मैत्री बढ़ाकर संकट की सृष्टि करके, पुनः पाँचवें व दूसरे भूत के बीच की दूरी को पार करके, पहले भूत की संतान को आनंदित करते हुए इस मधुवन में निवास करे और आप पर कृपा बनाये रखे ।''

उन वाक्यों को सुनते ही आस्थान के पंडित ने कहा ''वाह-वाह कविराज, अद्‌भुत, महाअद्‌भुत । इसपर हमें गर्व है कि आप हमारी ज़मींदारी के नागरिक हैं । प्रभू, पंचभूतों की प्रसक्तियों के साथ सुंदरकांड सुनानेवाले इस कविदिग्गज का वाक्-चातुर्य प्रशंसनीय है ।''

फिर आस्थान-पंडित ने जनता को उसका भावार्थ यों बताया ''पंचभूतों में से पहली है भूमि । दूसरा जल, तीसरा अग्नि, चौथा वायु और पाँचवाँ है आकाश । चौथे भूत वायु का पुत्र है हनुमान । दूसरे और पाँचवें भूत के मध्य याने समुद्र-जल, भूमि व आकाश के बीच उड़ता हुआ लंका पहुँचा । पहले भूत की संतान याने भूपुत्री सीता को सांत्वना देकर, तीसरा भूत याने, अग्नि की सहायता से लंका को जलाकर, पुनः भूमि व आकाश के बीच उड़ता हुआ मर्कट राजा वाली के मधुवन जैसे आपके वन में निवास करेगा । आपको प्रत्यक्ष होगा ।''

सब ने हर्षातिरेक से तालियाँ बजायीं । ज़मींदार ने उस व्यक्ति से कहा ''महाकवि, उस मारुति ने ही आपके मुँह से सुँदरकांड की प्रशंसा करवायी और आपसे अनुरोध किया कि फिर से आप उसे रचें । यों उन्होंने आपके कर्तव्य की ओर संकेत भी किया है । राजा-राज्य मिट जाएँ किन्तु कवि तो चिरस्मरणीय हैं । आपकी काव्य-रचना के साथ-साथ मेरा नाम भी शाश्वत होगा । आज से आपको मारुतिकवि के नाम से पुकारेंगे । सुंदरकांड की रचना करके हमारा भी यश बढ़ाइये ।''

मारुति कवि ने उस वन में पंचभूतों के सुंदरकांड की रचना की और लोगों के आदर-अभिमान का पात्र बना । ज़मींदार की भी उसपर कृपा-दृष्टि रही ।

परोपकार

हेलापूर के एक प्रसिद्ध गुरुकुल में विद्याभ्यास के लिए दूर-दूर से विद्यार्थी आया करते थे। विश्वास किया जाता था कि वहाँ शिक्षित विद्यार्थियों में से कुछ योग्य विद्यार्थियों को राजा के दरबार में अवश्य ही नौकरी मिलेगी।

एक दिन गुरु विद्यानंद विद्यार्थियों को समझा रहे थे कि परोपकार से कितना पुण्य मिलता है। उन्होंने कहा "उदाहरण के लिए कुछ बूढ़ों की बात ही लीजिये। रास्ते में आती-जाती गाड़ियों के कारण वे सड़क पार नहीं कर पाते। उनकी समझ में नहीं आता कि अब क्या किया जाए? ऐसे असहाय बूढ़ों को सड़क की दूसरी ओर ले जाना पुण्य से भरा काम होता है।"

दूसरे दिन चार विद्यार्थी देरी से गुरुकुल आये। गुरु ने उनसे पूछा कि इतनी देरी क्यों हुई?

तब उन्होंने कहा "गुरुवर, जब हम यहाँ आ रहे थे तब एक वृद्ध सड़क के किनारे खड़ा था। हम चारों ने मिलकर उसे दूसरी ओर पहुँचाया।"

"बड़ी ही खुशी की बात है। उस वृद्ध को दूसरी ओर ले जाने में एक काफ़ी था। चारों की क्या ज़रूरत थी?" गुरु ने पूछा।

"उस बूढ़े ने जिद पकड़ी कि मैं दूसरी ओर आऊँगा ही नहीं। तो हम चारों ने मिलकर उसे उठा लिया और उस ओर ले गये। इसके सिवा और कोई चारा नहीं था।" विद्यार्थियों ने कहा।

यह सुनकर गुरु आश्चर्य में डूब गये।

-पार्थसारथी

चन्दामामा
सुवर्ण रेखाएँ
सबसे बड़ा आखेट
इतिहास के पूर्व युग के मनुष्य ग्रू ने अपने पथ्थर के आयुध को ज़ोर से फेंका
किन्तु चूक गया।
इसे अब नहीं छोड़ूँगा
खी....!
इस कहानी की मूल त्रुटि क्या है?

सुवर्ण रेखाएँ
प्रश्नावली
१ विश्वास किया जाता है कि स्काटलांड के तालाब में एक विचित्र भयंकर मृग है, जिसे देखने के लिए हज़ारों की संख्या में वहाँ की जनता आती रहती है। हज़ारों सालों से उनका वहाँ आना-जाना चालू है। उस भयंकर मृग का क्या नाम है?
२ टिबेट व हिमालय के अधिरोहकों का कहना है कि बरफ़ से ढके उन पहाड़ों पर उन्होंने एक ऐसे विचित्र प्राणी को देखा, जो आधा मनुष्य है और आधा जंतु के आकार का है। उस प्राणी का क्या नाम है ?
३ अट्लांटिक महासमुद्र के एक प्रदेश के आसपास जाने से, जहाज़ और हवाई जहाज़ दूर रहते हैं। उस प्रदेश से गुज़रते हुए कितने ही जहाज़ों और हवाई जहाज़ों का पता ही नहीं चला। इसी कारण वे उधर से गुज़रते ही नहीं। उस प्रदेश का क्या नाम है?

४ पक्षियों के अस्थिपंजर बहुत ही हल्के होते हैं। कारण क्या है?
५ मनुष्य की गरदन में सात हड्डियाँ होती हैं। जिराफी की कितनी हड्डियाँ होती हैं?
६ एडगार वालास के उपन्यास के आधार पर १९३३ में एक चित्रपट का निर्माण हुआ। उस चित्रपट में दिखाया गया कि भयंकर आकार का एक गोरिल्ला न्यूयार्क नगर की सड़कों पर दौड़ रहा है। उस चित्रपट का क्या नाम है?
७ बहुत ही बड़ा अंडा देनेवाले पक्षी का क्या नाम है?
८ सोर मछलियाँ सदा घूमती रहती हैं। क्या जानते हो कि वे कब घूमना बंद कर देती हैं?
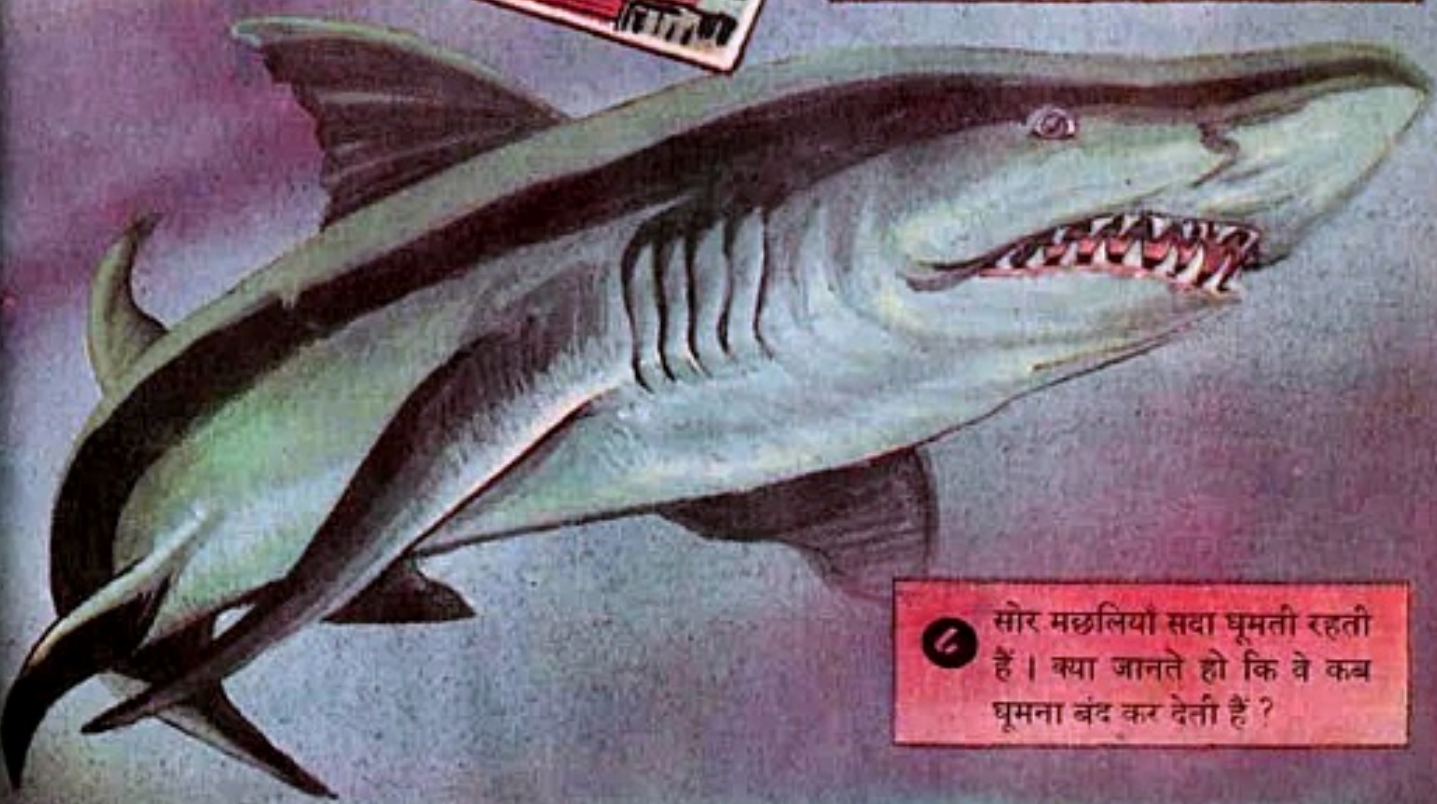
डैनोज़र कटआउट तैयार कीजिये

इस डेनौज़र कटआउट को एक दृढ़ पुट्टे पर बड़ा कीजिये। (एनलार्ज किये गये फ़ोटो कापी पर ट्रेस कर सकते हैं) बिंदियों की रेखाओं और टूटी रेखाओं को ट्रेस कीजिये। रूपरेखा को कतरिये और रंगों से भरिये। अब आपकी रूपरेखा तह करने लायक हो गयी है। तह करने के पहले बिंदियों की रेखाओं पर कैंची के अग्रभाग से थोड़ी-सी जगह बना लीजिये। बिंदियों की रेखाओंवाले (...) शरीर भाग को नीचे की ओर मोड़िये। अब रेखाएँ दिखायी नहीं देंगीं। पूंछ के दोनों टुकड़ों को एक बनाइये और चिपकाइये। लाल रंग में दिखाये गये भागों को तस्वीर में दिखायी गयी पद्धति से चिपकाइये।

मैत्रेय के प्रस्थान के बाद धृतराष्ट्र ने विदुर से किम्मीर के संहार के बारे में कहने को कहा। विदुर ने वह वृत्तांत यों सुनाया।

अरण्यवास करने निकले पाँडव तीन दिनों की यात्रा के उपरांत आधी रात को किम्मीर वन से गुज़र रहे थे। उन्होंने देखा कि एक भयंकर राक्षस चमकती आँखें लिए, मुँह खोले, हाथ फैलाये उनका रास्ता रोके खड़ा हुआ है। उसकी लाल-लाल आँखें, सफ़ेद चौघड़, सिर पर सुवर्ण रंग के नुकीले बाल, काला शरीर बड़ा ही भयानक लग रहे थे। उसकी चिल्लाहटों से डरकर जंगली जानवर भागे जा रहे थे। उसके हाथों में जलती मशाल थी।

पाँडवों ने, द्रौपदी ने तथा साथ-साथ आ रहे ब्राह्मणों ने उस राक्षस को देखा। द्रौपदी ने डर के मारे आँखें बंद कर लीं। पाँडव उसे धैर्य बंधा रहे थे। धौम्य राक्षस-विनाश के मंत्रों को जपने लगा।

धर्मराजा ने उस राक्षस से पूछा "तुम कौन हो? इस वन में क्यों हो?" राक्षस ने कहा "मैं बकासुर का भाई हूँ। मेरा नाम किम्मीर है। काम्यक वन में अपनी इच्छा के अनुसार संचार करता रहता हूँ। मानवों को मारकर खा जाता हूँ। यह मेरी प्रिय क्रीडा है। अतः कोई भी मनुष्य यहाँ आने का साहस नहीं करते। आप लोग यहाँ क्यों आये? जब आ ही गये हैं तो आप सबको मारकर खाये बिना नहीं रहूँगा।"

धर्मराज ने उससे कहा "हम पाँडव हैं। मेरा नाम धर्मराज है। ये चारों मेरे सगे भाई हैं। नियमबद्ध होकर हम वनवास करने निकले हैं।"

किम्मीर ने कहा "अच्छा तो, आप लोग पाँडव हैं? यही क्या भीम है? लंबे

अर्से से इसे मारने की मेरी प्रबल इच्छा है। अच्छा हुआ, आज मेरी मनोकामना पूरी होने जा रही है। मेरे मित्र हिडिंब को इसने मार डाला और उसकी बहन हिडिंबि से शादी कर ली। इसका दुर्भाग्य इसे इस जंगल में ले आया। अब तो यह मेरे हाथ आ गया। हिडिंब को इसका रक्त-तर्पण करूंगा। तुम सब लोगों की उपस्थिति में इसे मार डालूंगा, इसका रक्त पी जाऊंगा, इसका मांस खा जाऊंगा और अपनी जाति का प्रतीकार लूंगा।''

धर्मराज उसकी दर्प-भरी बातों से बहुत ही क्रोधित हो गया और चिल्ला पड़ा ''चुप रह अधम''। भीम ने एक पेड़ उखाड़ा और किम्मीर से भिड़ने तैयार हो गया। अर्जुन ने गाँडीव की प्रत्यंचा सीधी की और बाणों की बौछार करने सन्नद्ध हो गया। भीम ने अर्जुन को रोकते हुए कहा ''तुम ठहर जाओ। इस दुष्ट का अभी अंत करता हूँ और यमलोक भेज देता हूँ।'' कहते हुए उसने पेड़ किम्मीर पर फेंका।

किम्मीर ने उस चोट से रूठकर अपनी मशाल भीम पर फेंकी। भीम ने अपने बायें पैर से उसे बुझा दिया। फिर दोनों पेड़ उखाड़ते गये और एक दूसरे पर फेंकते गये। फिर पथ्थरों से दोनों एक दूसरे को मारते रहे। आख़िर दोनों की मुठभेड़ हुई। दौनों ने एक-दूसरे को चीरा। दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। जब भीम ने देखा कि राक्षस किम्मीर कमज़ोर पड़ता जा रहा है तो उसे अपनी कांख में दबोच लिया और लगातार चारों ओर घुमाता रहा। उसे नीचे गिराकर कमर को अपने पाँव से दबाते हुए उसका सिर व हाथ पकड़े और उसे तोड़कर मार डाला। पीडा सह न सकने के कारण वह चीखता-चिल्लाता रहा। भीम ने उसका शव दूर फेंक दिया। उस जंगल को उस राक्षस से बचा लिया। द्रौपदी व धौम्य ने भीष्म को हार्दिक बधाइयाँ दीं।

विदुर ने किम्मीर के वध का वृत्तांत यों सुनाया तो धृतराष्ट्र लंबी-लंबी साँसें भरता हुआ, सिर झुकाकर सोच में पड़ गया।

यादव व पाँचालों को जब मालूम हुआ कि अधर्म-भरे जुए में हारने के बाद पाँडव वनवास कर रहे हैं तो उन्हें देखने आये।

यादवों के साथ आये कृष्ण ने क्रोध-भरे आवेश में कहा "पापी दुर्योधन, दुश्शासन, शकुनि, कर्ण आदि के रक्त से भूमि सिंचे। ऐसे धर्महीनों को मारना ही उत्तम धर्म है। सबको एक साथ मारकर धर्मराज्य का राज्याभिषेक करेंगे।"

द्रौपदी अपने धृष्टद्युम्न आदि पांचालों को अपने साथ ले आयी और कृष्ण से उनपर कौरवों के किये गये अन्यायों, अत्याचारों व अपमानों के पूरे विवरण सुनाती रही और बिलख-बिलखकर रोती रही।

कृष्ण ने उसे सांत्वना देते हुए कहा "द्रौपदी, तुम्हारा अपमान करनेवाले उन दुष्टों का अवश्य नाश होगा। उनकी पत्नियाँ तुमसे भी अधिक शोकग्रस्त होंगीं, दुख-सागर में डूबेंगीं। भविष्य में पाँडव अवश्य ही राजाधिराज होंगे। तुम महारानी बनोगी।"

अर्जुन, धृष्टद्युम्न ने भी द्रौपदी को सांत्वना दी। कृष्ण ने धर्मराज से कहा "मैं अगर उस समय द्वारका में होता तो बिन बुलाये भी आता और वह मायावी जुआ देखता। तुम लोगों की सहायता करता। अगर मैं वहाँ उपस्थित होता तो जुआ होने ही नहीं देता। दुर्योधन मेरी बात मानने से इनकार करता तो उसे सज़ा देता, उसे अच्छा पाठ सिखाता। द्वारका पहुँचते ही ययुधान ने पूरा विषय मुझे बताया। तक्षण ही आपसे मिलने यहाँ आ गया।"

धर्मराज ने पूछा "तुम उन दिनों द्वारका में क्यों नहीं थे? कहाँ गये?"

"राजसूय-यज्ञ के समय मैंने शिशुपाल को मारा। इसपर उसके भाई साल्व ने मुझसे प्रतीकार लेना चाहा। उसके

सौभनगर पर आक्रमण करने, उससे युद्ध करने वहाँ चला गया था'' कृष्ण ने तत्संबंधी पूरी कहानी यों सुनायी ।

जब साल्व को मालूम हुआ कि राजसूय यज्ञ के समय कृष्ण ने अपने चक्रायुध से शिशुपाल को मार डाला तो उसने सौभ नामक विमान में बैठकर द्वारका पर चढ़ाई कर दी । कृष्ण तब इंद्रप्रस्थ में ही था । अतः अपने नगर को घेरे साल्व से युद्ध करने उग्रसेन उद्यत हुआ । दुर्ग की रक्षा के लिए शूरों को नियुक्त किया और युद्ध करने गद, सांब आदि को युद्धक्षेत्र में भेजा । उस युद्ध में प्रद्युम्न ने अद्‌भुत पराक्रम दिखाया और साल्व की सेनाओं को छिन्नाभिन्न कर दिया ।
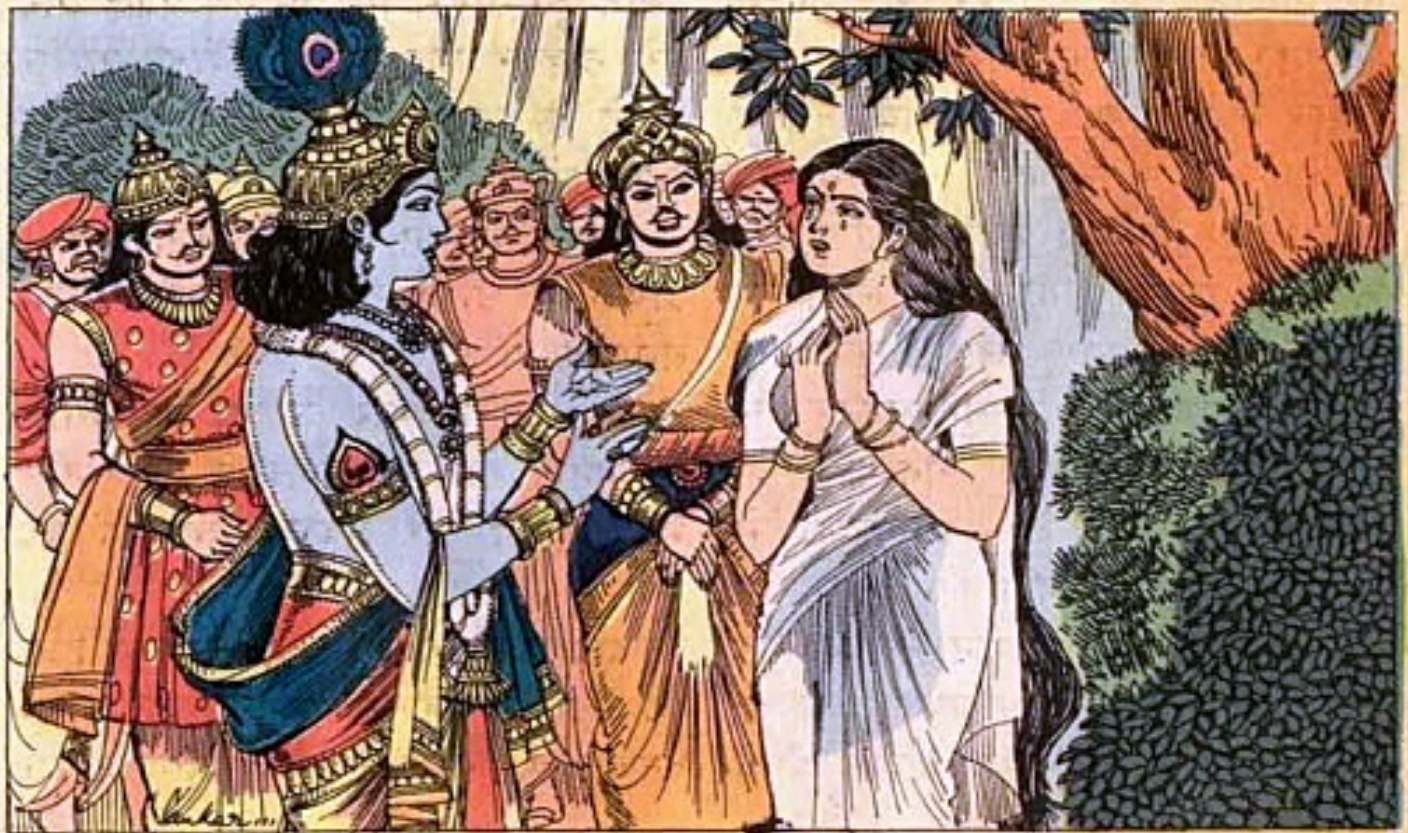
इतने में कृष्ण इंद्रप्रस्थ से द्वारका आ गया । विषय की ज्ञानकारी प्राप्त करके उसने शपथ ली कि साल्व को मारने के बाद ही द्वारका में प्रवेश करूँगा । युद्ध सन्नद्ध होकर निकल पड़ा । साल्व को जब यह मालूम हुआ तो अपने सौभ विमान में बैठकर समुद्री तट की ओर भागा । कृष्ण उसका पीछा करता रहा ।

साल्व ने अपने विमान को समुद्र के ऊपर के शून्य में खड़ा कर दिया और हँसते हुए कृष्ण को युद्ध करने आह्वानित किया ।

कृष्ण ने अनगिनत बाण फेंके, किन्तु एक भी बाण साल्व को छू नहीं पाया । परंतु उसके फेंके बाण कृष्ण पर वर्षा की तरह बरस रहे थे । यह देखते हुए विमान में बैठे साल्व के अनुचर खुशी से फूले न समाये । वे तालियाँ बजाने लगे । उस ध्वनि का अनुसरण करते हुए कृष्ण ने बाण छोड़े और कुछ लोगों को मारने में सफल हुआ । किन्तु विमान की सहायता से साल्व मायावी युद्ध में सफल हुआ । कृष्ण के सारथी दारुक को भी लगा कि कृष्ण की जीत नहीं होगी ।

इन दारुण परिस्थितियों में कृतवर्मा का भेजा एक दूत वहाँ आया । उसने दुखद समाचार सुनाया कि साल्व ने अप्रत्यक्ष हो, द्वारका में प्रवेश किया और कृष्ण के पिता वसुदेव को मार डाला । कृष्ण सोच में पड़ गया कि इस समाचार का विश्वास किया जाए या नहीं कि इतने में उसने देखा कि वसुदेव का शव आकाश से नीचे गिरा । इस घटना से कृष्ण निराश हो

गया। रथ के कोने में बैठ गया। उसके हाथ से धनुष नीचे गिर गया। कृष्ण की सेनाओं में हाहाकार मच गया।

यह जानने में कि यह सब साल्व की रची माया है, थोड़ा समय लगा। साल्व की चालों को बखूबी समझते हुए कृष्ण ने अंततः अपने चक्रायुध का प्रयोग किया। साल्व को, उसके विमान को, उसमें उपस्थित सबों को मार डाला। युद्ध जीतकर जब द्वारका लौटा तो मालूम हुआ कि पाँडव वनवास करने चल पड़े हैं। तक्षण ही वह पाँडवों से मिलने आया।

पाँडवों से मिलने आये यादव, पाँचाल, कैकेय सब लौट चले।

वनवास करते हुए पाँडव आनेवाले युद्ध के बारे में सोचने लग गये। एक दिन धर्मराज ने अर्जुन से कहा "अर्जुन, पूर्व वृत्रासुर के अत्याचारों से भयभीत होकर सब देवताओं ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र इंद्र के पास सुरक्षित रखे। प्रतिस्मृति नामक विद्या व्यासमुनि ने मुझे सिखायी। तुम उस विद्या के द्वारा इंद्र को प्रसन्न करो और उन अस्त्र-शस्त्रों को अपनाओ। आनेवाले युद्ध में भीष्म, द्रोण, कर्ण आदि महाशूर कौरवों के पक्ष में युद्ध करेंगे। मैं चिंताग्रस्त था कि इनका सामना कैसे किया जाए तो अकस्मात् व्यास महामुनि प्रत्यक्ष हुए और प्रतिस्मृति नामक विद्या मुझे प्रदान की। उन्होंने चाहा कि मैं यह विद्या तुम्हें दूँ। तुम यह विद्या मुझसे स्वीकार करो और आज ही उत्तर दिशा की ओर निकलो।"

अर्जुन ने, धर्मराज से प्रतिस्मृति विद्या ग्रहण की, अग्नि की आराधना की, प्रदक्षिणा की। कवच, गाँडीव, अक्षय तूणीरों को लिया और धौम्य, धर्मराज को प्रणाम करके, उनकी अनुमति लेकर निकल पड़ा।

द्रौपदी उसे बिदा देने साथ-साथ थोड़ी दूर आयी और कहा "तुम्हारा अभियान सफल हो। तुम्हारी अनुपस्थिति अवश्य ही हमें दुख पहुँचायेगी। तुम्हारा कल्याण चाहते हुए हम तुम्हारी प्रतीक्षा करते रहेंगे। हमारे सब कष्ट-सुख तुम्हीं पर आधारित हैं। निर्विघ्न होकर अपने लक्ष्य में सफल होकर लौटना।"

अर्जुन ने अरण्यों से होते हुए यात्रा की। हिमालय, गंधमादन पर्वत को पार

किया और इंद्रकीलाद्रि पहुँचा। जब वह बड़े वेग से जा रहा था तो उसने सुना "ठहरो।"

अर्जुन ने चारों ओर दृष्टि फैलाकर देखी कि इस निर्जन प्रदेश में ध्वनि कहाँ से आयी। तब उसने देखा कि एक पेड़ के तले एक तपस्वी बैठा हुआ है। पिंगल वर्ण का उसका देह था। जर्जर व शिथिल होते हुए भी उसके मुखारविंद से ब्रह्म तेजस्व टपक रहा था।

अर्जुन उसके सम्मुख जाकर खड़ा हो गया।

"पुत्र, तुम कौन हो? युद्ध में भाग लेनेवाले योद्धा की तरह कवच पहने, आयुध लिये जंगल में क्यों भटक रहे हो? यहाँ महान तपस्वी तथा इंद्रियों पर विजय पानेवाले विजेता रहते हैं। ऐसे स्थल पर इन आयुधों की क्या आवश्यकता? इन्हें दूर फेंक दो।" उस तपस्वी ने कहा।

अर्जुन ने उसकी बात नहीं मानी। तपस्वी ने बहुत समझाया पर वह टस से मस न हुआ। तब तपस्वी ने कहा "पुत्र, तुम्हारे दृढ़ संकल्प की मैं प्रशंसा करता हूँ। मैं इंद्र हूँ। पूछो, तुम्हें क्या वर चाहिये?"

अर्जुन ने इंद्र को प्रणाम किया और सविनय कहा "देव, मुझे दिव्यास्त्र प्रदान कीजिये।"

इसपर इंद्र ने कहा "पगले, अब तो तुम्हें अस्त्रों की क्या आवश्यकता? तुम्हें पुण्य लोक प्रदान करूँगा। निश्चिंत होकर शांत जीवन व्यतीत करो।"

"मेरे भाई जंगल में नाना प्रकार के कष्ट झेल रहे हैं और मैं निश्चिंत रहूँ? शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करूँ? यह कदापि मुझसे नहीं होगा। मैं क्षत्रिय हूँ। मृत्यु के बाद भी मेरी कीर्ति, मेरा यश शाश्वत होकर रहे। मैं अपने सुखों के लिए अपना जीवन कलंकित करना नहीं चाहता" अर्जुन ने स्पष्ट कहा।

इंद्र ने अर्जुन के आदर्शों की भरपूर प्रशंसा की और कहा "पुत्र, तुम्हारी इच्छा पूरी होनी हो तो तुम्हें पहले भगवान शंकर का दर्शन करना होगा। जाओ और उनका दर्शन करो।" कहकर इंद्र अदृश्य हो गया।

मधुर अनुभूति

महीधर अंधा है। पत्नी के मर जाने से उसके संरक्षण का भार उसके तीनों बेटों पर पड़ा। एक बार उसके घर एक बहुत ही अच्छा चित्रकार आया। वह चाहता है कि एक सुंदर स्त्री का चित्र खींचूं। किन्तु महीधर की तीनों बहुओं को देखने के बाद उसे लगा कि वे तीनों एक से बढ़कर एक सुंदर है। उसे मालूम नहीं हो पाया कि अब क्या करूं। उसने अपने संदेह का समाधान उन तीनों बहुओं से पूछा। वे सुकुचायीं। पतियों से पूछा तो उन्होंने अपनी-अपनी पत्नी का नाम मात्र बताया। पडोसियों से पूछा तो उन्होंने अपनी-अपनी राय दी।

चित्रकार असमंजस स्थिति में पड़ गया। वह किसी निर्णय पर नहीं आ पा रहा था। उस रात को उसकी पलंग महीधर की पलंग के पास ही डाली गयी। बातों-बातों में चित्रकार की समस्या को जानने के बाद महीधर ने कहा "इस छोटी-सी बात पर इतनी माथ-पच्ची क्यों? मेरी दूसरी बहू से बढ़कर कोई सुंदरी नहीं है इस संसार में।"

दूसरे दिन उठते ही चित्रकार ने निर्णय कर लिया कि दूसरी बहू का चित्र खींचूंगा। सब ने जान लिया कि उसके इस निर्णय का कारक महीधर है। उन्होंने चित्रकार की हँसी उड़ाते हुए कहा "हम सबकी बात टाल दी। अंधे की बात ही सही लगी।"

"आँखों से नापी जानेवाली सुंदरता से बढ़कर है, अनुभूति से नापी जानेवाली सुंदरता। इसका अधिकार व अवकाश जितना अंधे को है, उतना किसी दूसरे को नहीं। आत्मसौंदर्य को बाह्य सौंदर्य से अलग करके देख सकने की शक्ति व योग्यता केवल अंधे में ही होती है। तीन बहुएँ बाह्य सौंदर्य में समान हैं किन्तु दूसरी बहू में आत्मसौंदर्य की मात्रा अधिकाधिक है। इन दोनों सौंदर्यों के होने के कारण अन्यों से वह अवश्य ही अधिक सुंदरी है।" चित्रकार ने कहा।

यह सुनती हुई बाकी दोनों बहुओं ने दूसरी बहू की ओर मुस्कुराते हुए देखा। - रामकमल

'चन्दामामा' परिशिष्ट - ९८

हमारे देश के वृक्ष

शिरीष

शिरीष वृक्ष हमारे प्राचीन कवियों का अति प्रिय वृक्ष है। कालिदास ने अपने, 'अभिज्ञान शाकुंतलं' में लिखा था कि कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला अपने केशों में शिरीष पुष्प सजाती थी। तुलसीदास ने अपने 'रामचरितमानस' में लिखा था कि श्रीरामचंद्र का मन शिरीष कुसुम के समान कोमल है। रुड्यार्ड किप्लिंग हमारे देश में बहुत समय तक रहे। उन्होंने उस कोयल की कूक की भरपूर प्रशंसा की, जो शिरीष वृक्ष की टहनी पर बैठ कर गाता है। अंग्रेज़ी में शिरीष पेड़ को 'पैरेट ट्री' 'वुमन्स टंग' 'ईस्ट इंडियन वालनट' के नामों से पुकारते हैं।

शिरीष वृक्ष जंगलों में बड़ी ऊँचाई तक बढ़े हुए होते हैं। यद्यपि हमारे पूरे देश में ये वृक्ष पाये जाते हैं, पर निचले हिमालय प्रदेशों में, पश्चिम बंगाल, छोटा नागपूर, अंदमान द्वीपों में अधिकतर पाये जाते हैं। सड़कों के दोनों ओर अलंकार-वृक्ष के रूप में ये पेड़ पनपाये जाते हैं। इनकी जड़ें पतली और नाटी होती हैं, इसलिए तूफ़ान का सामना नहीं कर पातीं।

मार्च-अप्रैल के बीच शिरीष में फूल लगते हैं। ये फूल गुच्छों में विकसित होते हैं। इसका रंग कोमल हरा व सफ़ेद होता है। लगभग चमेली की गंध इनसे आती है। पत्ते छोटे होते हैं। अक्तूबर-नवंबर महीनों के बीच पत्ते झड़ जाते हैं। इन दोनों महीनों में यह कुंदा दिखायी देता है। अप्रैल महीने में फिर से कोंपले निकल आते हैं। अगस्त-सितंबर में फल पक्के होकर फलते हैं।

शिरीष की लकड़ी मज़बूत होती है। इसलिए गाड़ी के पहियों के लिए तथा कृषि-कार्य के लिए आवश्यक औजारों के लिए इसका उपयोग होता है।

हिन्दी, बंगाली, मराठी, गुजराती, तेलुगु, कन्नड भाषाओं में इसे शिरीष कहते हैं। तमिल में 'वेगैमरम' व मलयालम में 'वेग मरम' कहते हैं।

हमारे देश के ऋषि

गालव

महामुनि विश्वामित्र के पुत्र थे गालव। एक दिन संध्या में जब वे नदी जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य दे रहे थे, तब चित्रसेन नामक गंधर्वराजा ने आकाश-मार्ग से जाते हुए थूका। वह थूक सीधे मुनि की हथेली में आ गिरा। इससे गालव के मन को ठेस पहुँची। वे अति क्रोधित हो उठे। वे श्रीकृष्ण के पास गये और कहा "उसे मृत्यु-दंड ही एक मात्र मार्ग है।" श्रीकृष्ण ने अपनी स्वीकृति दी।

नारद मुनि ने यह समाचार चित्रसेन को सुनाया। गंधर्व राजा हताश होकर प्राण-भीति से काँपता हुआ, नारद मुनि से इस मृत्यु-दंड से बचने के लिए उपाय की याचना की। नारद ने उसे सांत्वना दी और कहा कि तुम अपनी दोनों पत्नियाँ रत्नावली तथा संध्यावली को श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी सुभद्रा की शरण में जाने को कहो।

चित्रसेन अपनी दोनों पत्नियों समेत, सुभद्रा देवी के महल के पीछे उतरा। उसने वहाँ एक चिता फैलायी। हाथ जोड़कर चित्रसेन चिता के समीप खड़ा हो गया। दोनों पत्नियाँ जोर-जोर से रोने लगीं। सुभद्रा ने जब उनका रोदन सुना तो वहाँ आयी और उनसे कारण पूछा। उन्होंने कारण बताया और कहा "अगर आपके भाई के हाथों इनकी मृत्यु होगी तो हम दोनों इस चिता में कूदेंगी और प्राण दे देंगी।"

सुभद्रा को उनकी दीनता पर दया आयी। पति अर्जुन से चित्रसेन की रक्षा की प्रार्थना की। शरण में आये व्यक्ति की रक्षा क्षत्रिय का धर्म है, अतः अर्जुन ने अपने तूणीरों से चित्रसेन के देह के चारों ओर अदृश्य कवच का निर्माण किया। कृष्ण के बाण उस कवच का छेदन नहीं कर पाये। कृष्ण स्वयं वहाँ आये। अर्जुन ने चित्रसेन की रक्षा करना अपना धर्म व कर्तव्य बताया। दोनों में युद्ध छिड़ा। सुभद्रा हठात् दोनों के मध्य खड़ी हो गयी और दोनों से युद्ध रोक देने की प्रार्थना की।

कृष्ण ने चित्रसेन से कहा कि तुम गालव से क्षमा-भिक्षा माँगो। चित्रसेन, गालव के पैरों पर गिरा और अनजाने में घटे इस अपराध के लिए गालव से क्षमा माँगी। गालव मुनि शांत हुए और कृष्ण से कहा "पश्चात्ताप से बढ़कर प्रायश्चित नहीं है। उसका अहंकार मिट गया अतः इसका संहार मत कीजिये।"

क्या तुम जानते हो?

१. चिकागो में संपन्न विश्वधर्म महासभा में स्वामी विवेकानंद ने भाग लिया। यह किस साल संपन्न हुआ?

२. १७८१ में, यार्क टौन में ब्रिटिश सेनाओं ने अपनी हार मान ली। यों अमेरीका का स्वतंत्रता-युद्ध सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। उस समय ब्रिटिश कमांडर कौन थे?

३. मूढ विश्वासों तथा कर्मकांड की समालोचना करनेवाले हिन्दू धर्म के वे नेता कौन थे?

४. रोनाल्ड असुंडसन १९११ में दक्षिणी ध्रुव पहुँचे। वे किस देश के नागरिक थे?

५. आँध्र प्रदेश के शिवरामपल्लि नामक गाँव से एक मुख्य आँदोलन प्रारंभ हुआ। उसका क्या नाम है?

६. नूवियन रेगिस्तान कहाँ है?

७. 'वंदेमातरम' गीत एक उपन्यास का अंश था। किस उपन्यास में? उसके रचयिता कौन थे?

८. फेर्डिनांड डी लेसेप्स कौन हैं? वे कैसे प्रसिद्ध हुए?

९. 'टोकन करेन्सी' को भारत देश में पहले पहल प्रवेश करानेवाले कौन थे?

१०. ब्रिटिश सैनिक टी.इ. लारेन्स ने दूसरे देश की तरफ़ से लड़ाई लड़ी। किस देश की तरफ़ से?

११. भारत के एक क्रांतिकारी योद्धा ने जेल में आमरण उपवास की दीक्षा ली और मर गये। वे कौन थे?

१२. किसी ने कहा कि ईसा के बाद जन्मे महान यूद अल्बर्ट आइनस्टन हैं। यह किन्होंने कहा?

१३. 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता कौन हैं?

१४. हांकांग से वैद्य-शास्त्र में प्रप्रथम स्नातक बने चीन के नेता का क्या नाम है?

१५. एक गुहालय 'त्रिमूर्ति' मूर्ति के लिए सुप्रसिद्ध है। वह गुहालय कहाँ है?

१६. सुप्रसिद्ध 'अमेरिकन लैब्ररी आफ कांग्रेस' के निर्माता कौन हैं?

उत्तर

१. १८९३
२. लार्ड कार्नवालीस
३. स्वामी विवेकानंद
४. नार्वे
५. भूदान आँदोलन
६. सुडान
७. बंगाली उपन्यास 'आनंदमठ'
८. फ्रांस के दौत्य वेत्ता ने सूयेज नहर का निर्माण किया।
९. फिरोज तुगलक
१०. अरेबिया
११. जाटिन दास
१२. जे.बि.एस. हाल्डेन
१३. भरतमुनि
१४. सनएटसन, चीन रिपब्लिक के निर्माता
१५. एलिफेंटा
१६. हेर्बर्ट पुट्नम

सुवर्ण रेखाएँ प्रश्नावली सं ४ के उत्तर

१. हेच.जी. वेल्स से रचित उपन्यास "दि वार आफ़ दि वरल्डस्" के आधार पर प्रस्तुत रेडियो नाटक।

२. डयाना-रोमनों के इस चंद्रदेवता के आखेट के भी अधिदेवता थे।

३. पुराना होकर छिन्नाभिन्न होने का मतलब है - नाश होता हुआ नक्षत्र।

४. शुक्रग्रह। यह एकमात्र ग्रह पूरब से पश्चिम की ओर घूमता रहता है।

५. फेर्डिनांड मेगेलान. लार्ड मेगेलानिक क्लौड। स्माल मेरोलानिक क्लौड। ये दोनों नक्षत्र वीथियाँ हमसे नज़दीक ही हैं।

६. उत्तर अमेरीका के अरिजोना में

७. हेलीस पुच्छलतारा। यह ७६ वर्षों में एक बार भूमि की ओर आता है। आख़िरी बार यह दिखाई पड़ा १९८६ में।

अंतरिक्ष की साहस-यात्रा

अंतरिक्ष नौका ने आक्रमण के लिए इसी मार्ग का अनुसरण किया।
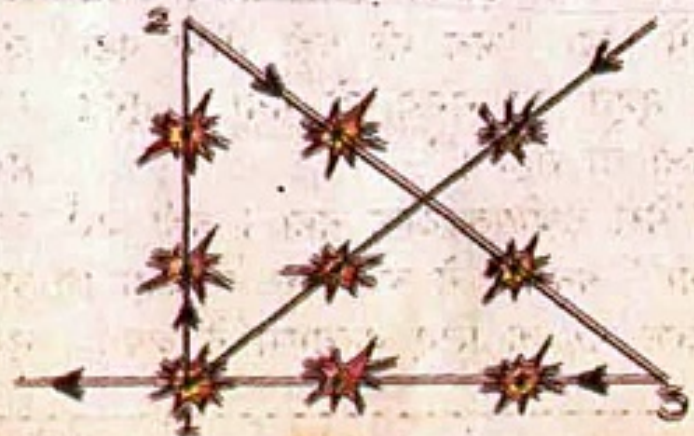
कल्याणी का विवाह

अनसूया को इस बात का बड़ा दुख है कि पार्वती ने अपने बेटे आनंद के लिए कहीं रिश्ता पक्का किया। वह उसके घर में किराये पर रहती है। आख़िर विवाह के मुहूर्त का दिन आ ही गया।

बाहर विवाह-मंडप में शोरगुल मचा हुआ था। बाजे बज रहे थे। बच्चे ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे। अनुसूया वैसे ही बड़ी दुखी थी, तिसपर इस शोरगुल से उसके सिर में दर्द होने लगा। खाट पर पड़ी वह पार्वती की दुर्बुद्धि पर सोचने-विचारने लगी। फुर्ती से अंदर आयी उसकी लड़की कल्याणी ने माँ से पूछा "अब भी यहीं सोयी पड़ी हो? मुहूर्त का समय हो गया। तुरंत निकलो तो सही।"

"मेरी तबीयत ठीक नहीं। नहीं आ सकूँगी" अनुसूया ने रूखे स्वर में कहा।

क्षण भर के लिए कल्याणी ने अपनी माँ का मुख देखा और कुछ कहे बिना वहाँ से चली गयी।

माँ-बेटी दो सालों के पहले यहाँ किराये पर रहने आयीं। उन दिनों पार्वती का बेटा बेरोज़गार था और जब देखो, बेकार इधर-उधर घूमता-फिरता था। कोई जिम्मेदारी संभालने तैयार ही नहीं था। पार्वती को अपने बेटे की बड़ी चिंता लगी रहती थी। वह अनुसूया को अपना दुखड़ा सुनाती और कहती रहती थी कि इससे व्यापार कराने की इच्छा है, पर पूँजी नहीं है। पता नहीं, कब और कैसे इसकी जीवन-नौका पार होगी।"

पति के मरते समय अनसूया के पास पचास हज़ार रुपये थे। उनमें से बीस हज़ार रुपये खर्च हो गये। बाकी तीस हज़ार रुपये अपनी बेटी की शादी के लिए उसने सुरक्षित रखे। अचार बनाती, पापड खुद

अजीत

बेलती और बेचती थी। इससे जो रक़म मिलती थी, अपना परिवार संभाल रही थी। आत्म-सम्मान के साथ जी रही थी।

एक दिन उसने पार्वती से कहा "हम पराये हैं, फिर भी अपने परिवार के सदस्य की तरह हमसे व्यवहार कर रही हैं। अपने बेटे से कहिये कि वह कोई व्यापार शुरू करे। दो और सालों तक कल्याणी की शादी करने का मेरा इरादा भी नहीं है।" कहती हुई उसने तीस हज़ार रुपये पार्वती को दिया।

पार्वती की आँखों में आँसू आ गये। उसने अनसूया के हाथ पकड़ते हुए कहा "तुम्हारा दिल कितना बड़ा है। अनसूया, यह रक़म तुझे वापस देनेवाली नहीं हूँ। दो सालों के बाद कल्याणी बहू बनकर मेरे घर में क़दम रखेगी।"

उस रक़म से आनंद ने व्यापार किया। भाग्य ने उसका साथ दिया। दो ही सालों में दो लाख रुपयों से अधिक ही कमाया।

अब अनसूया, पार्वती से आनंद और कल्याणी के विवाह की बात कहना ही चाहती थी कि अचानक एक दिन पार्वती उसके पास आयी और तीस हजार रुपये वापस देती हुए बोली "अच्छी तरह गिन लो अनुसूया। तुम्हारी रक़म ब्याज सहित चुका दी।"

अनसूया अचंभे में आकर बोली "यह क्यां? आंप ही ने कहा था कि इस रकम को दहेज मानकर कल्याणी से अपने बेटे की शादी कराऊँगी; अपने घर की बहू बनाऊँगी।"

"हाँ, मानती हूँ कि दो सालों के पहले कहा था। पर इस बीच हालातों में बड़ी तब्दीलियाँ आ गयीं। मुंगेर के शंकरजी स्वयं आये थे। उनका मन भी उनके तन की ही तरह विशाल है। वे लाख रुपये दहेज में देनेवाले हैं। मैं तो थोड़ा-बहुत सकुचायी, पर मेरा बेटा आनंद उसी रिश्ते को पक्का करने के लिए ज़ोर दे रहा है। तुम्हारे दिये धन के बल पर सफल व्यापारी भी बन गया न, इसलिए हर चीज़ को व्यापारी की दृष्टि से ही तोलने की आदत डाल ली। जो हो गया, भूल जाओ।" कहती हुई वह फ़टाक् से उठी और ऐसी चली गयी मानों कोई ज़रूरी काम हो।

आज तक अनसूया निश्चिंत थी, क्योंकि उसने विश्वास कर लिया था कि पार्वती

कल्याणी को बहू बना लेगी । पर अब उसका विश्वास टूट गया ।

अनसूया ने ठान लिया था कि आनंद की शादी के बाद उस घर में एक पल भी नहीं रहूँगी । वह किराये का घर ढूँढ़ने लगी । शाम तक वह घूमती रही, किन्तु कोई घर किराये पर नहीं मिला । निराश होकर जब घर लौटने लगी तब उसने देखा कि एक घर में शांति छायी हुई है । घर के दो हिस्से हैं । दोनों में कोई रहता-सा नहीं लगता । घर के सामने के नारियल के पेड़ के नीचे एक युवक बैठा हुआ है और कुछ हिसाब कर रहा है ।

अनसूया ने उससे पूछा "बेटे, इस घर का कोई हिस्सा किराये पर देंगे?"

युवक ने उसे ग़ौर से देखा और पल भर सोचकर कहा "हमारे बग़ल का हिस्सा चार दिनों में खाली होनेवाला है । क्या देखेंगीं?"

घर के उस हिस्से में तीन कमरे हैं । अनसूया को वह जगह काफ़ी अच्छी लगी । उसने युवक से किराये के बारे में पूछा ।

"पाँच सौ । दो महीनों का किराया पहले ही चुकाना होगा ।" युवक ने कहा ।

अनसूया ने अपनी मंजूरी दे दी और उसे हज़ार रुपये दे दिये । कहा "हम इतवार को सामान सहित आयेंगीं ।"

इतवार के दिन सामान दो गाड़ियों में रखवा दिया और पार्वती से कहा "हम जा रही हैं ।" फिर गाड़ी में बैठकर माँ-बेटी चली गयीं ।

जब वह नये घर के सामाने सामान

उतार रही थी तो एक बुड्ढा पूछता हुआ बाहर आया कि कौन हैं आप?

"आपके बग़ल के हिस्से में किराये पर रहने आयी हैं" अनसूया ने कहा ।

"किराये पर रहने आयी है? वह हिस्सा तो खाली नहीं है । उसमें तो पाँच सालों से रामशास्त्री रह रहे हैं" आश्चर्य प्रकट करते हुए उस वृद्ध ने कहा ।

"आपके बेटे ने कहा था कि चार दिनों में वे खाली करके जानेवाले हैं । हज़ार रुपये बयाना भी दे चुकी हूँ ।" अनसूया घबराती हुई बोली ।

"हमारे कोई बाल-बच्चे नहीं हैं" कहते हुए बूढ़े ने अपनी पत्नी को आवाज़ दी ।

उस औरत के साथ-साथ बग़ल के हिस्से में रहनेवाले भी वहाँ आये । अनसूया ने
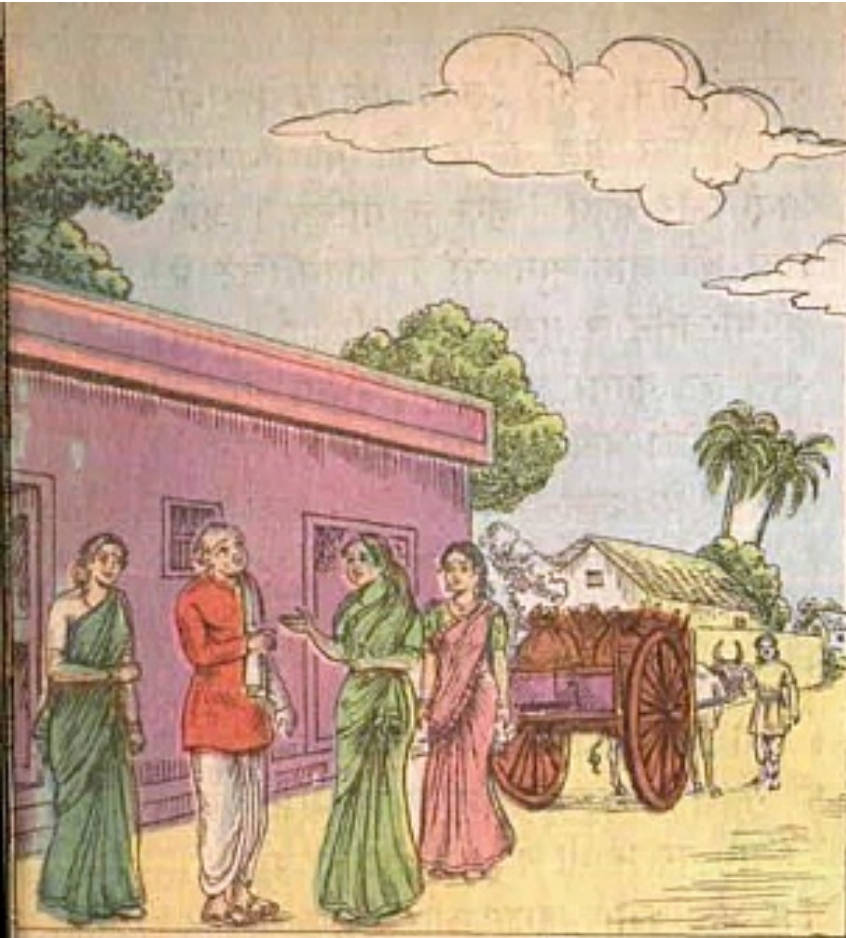
उन सबसे जो हुआ, बताया। "अब हमारा संदेह दूर हो गया। उस दिन शाम को मंदिर में ध्वज-स्तंभ की स्थापना कर रहे थे तो हम सब वहाँ गये। हमने सोचा कि तब तक शास्त्रीजी घर लौटेंगे, इसलिए घर की चाभी अपने रिश्तेदार के बेटे कल्याण कुमार को देकर गये। उससे कहकर गये कि घर की देखभाल करना। इनसे हज़ार रुपये उसीने लिये होंगे।" शास्त्री की श्रीमती ने कहा।

यह सुनते ही अनसूया पसीना-पसीना हो गयी। धोखेबाज़ उस कुमार पर वह बहुत नाराज़ हो गयी। वह कुछ कहनेवाली ही थी कि इतने में उस बूढ़े ने कहा "लगता है, घर खाली करके आयी हैं। अपना सामान आगे के कमरे में रख लीजिये। घर जब तक नहीं मिलता, तब तक यहीं रहिये।"

अनसूया ने उस बूढ़े को प्रणाम करके अपनी कृतज्ञता जतायी। सामान कमरे में रखने के बाद उसने पूछा "यह कल्याण कुमार रहता कहाँ है?"

"कचहरी में नौकरी ढूँढ़ता आया था। वह हमारे चाचा का पोता है। नौकरी नहीं मिली तो तीन दिनों के पहले अपना गाँव गुलेर चला गया।" बूढ़े ने कहा।

कल्याणी ने बहुत समझाया, पर अनसूया ने उसकी एक न मानी। उसने कहा "अभी गुलेर जाती हूँ और उस धोखेबाज़ को मज़ा चखती हूँ।"

गुलेर गाँव पहुँचते-पहुँचते शाम हो गयी। उस छोटे-से गाँव में उसका घर ढूँढ़ लेने में कोई कठिनाई नहीं हुई। किराये की गाड़ी भेज दी और बंद दरवाज़े को खटखटाने ही वाली थी कि अंदर से उसे किसी की बातें सुनायी पड़ीं।

"माँ, तुम्हारी बीमारी के लिए वैद्य की बतायी दवाएँ खरीदने मेरे पास पैसे नहीं थे। अब मेरी समझ में आ गया कि पच्चीस सालों की उम्र में भी मैं कितना ग़ैरजिम्मेदार हूँ। घर की देखभाल करना तो दूर, तुम्हारी भी सेवा नहीं कर पाया। बड़ी आशा लेकर गया था, बड़े चाचा से पैसे माँगने। किन्तु उन्होंने दिये नहीं। इसमें उनका कोई दोष नहीं। उन लोगों ने समझा कि अपनी बुरी आदतों का शिकार मैं झूठ बोल रहा हूँ, माँ की बीमारी का बहाना बना रहा हूँ।" कल्याण कुमार यों

जो हुआ, सब अपनी माँ से बता रहा था।

कुमार की माँ हाँफती हुई बोली "बेटे, अपनी खेती खुद करो। दूसरों के भरोसे मत छोड़ो। मैं तभी तेरा विश्वास करूँगी, जब तुम मेरा कहा मानोगे और करोगे। मैं इस बीमारी की वजह से घर भी संभाल नहीं पा रही हूँ।" "हाँ माँ, तुम्हारे कहे मुताबिक ही करूँगा। अपनी पुरानी गंदी आदतें छोड़ दूँगा। खुद खेती करूँगा। किन्तु पहली कमाई का पैसा उस औरत को दे आऊँगा, जिसे मैंने धोखा दिया। बड़े चाचाजी से शायद उस औरत का पता मालूम हो जायेगा। उस औरत को हज़ार रुपये वापस दे दूँगा और उससे माफ़ी माँगूँगा।" कल्याण कुमार ने माँ को सफ़ाई दी।

माँ-बेटे की बातचीत को सुनने के बाद अनसूया का क्रोध ठंडा पड़ गया। उसे बहुत ही आनंद हुआ। धीरे से दरवाज़ा खटखटाया। कुमार ने दरवाज़ा खोलकर अनसूया को देखा तो काँप उठा।

अनसूया ने मुस्कुराते हुए कहा "कल्याण, डरो मत। मेरे धन से कोई अच्छा काम हुआ, इसकी मुझे बड़ी खुशी है।" फिर वह कुमार की माँ के पास आयी और कहा "बुरा न मानिये। आप दोनों की बातें सुन लीं। आपके बेटे में हुए परिवर्तन से मुझे बड़ी खुशी हुई। आप अपने बेटे कुमार की शादी कराना चाहती हैं ना? मेरी बेटी कल्याणी सुंदर है, सुशील है। घर के काम-काज करने में बड़ी तेज है। आप एक बार आकर उसे देख भी लीजिये। किराये पर हमें कोई घर मिले तो ख़बर भेजूंगी।"

जो हुआ, उसपर कल्याण कुमार की माँ ने अपना दुख प्रकट किया और कहा "हमारे घर में भी दो कमरे खाली पड़े हैं। आप और कुमार जाइये और सामान सहित लौटिये। बिटिया को भी बुला लाइये। अब उस शहर में काम ही क्या रखा है।"

"हमारी कल्याणी का विवाह यहाँ होना था, इसीलिए ऐसा हुआ है। जिसके भाग्य में विधाता जो लिखते हैं, उसे कौन मिटा सकता है? जो होना है, होकर ही रहेगा।" अनसूया ने हर्ष-विभोर होकर कहा।
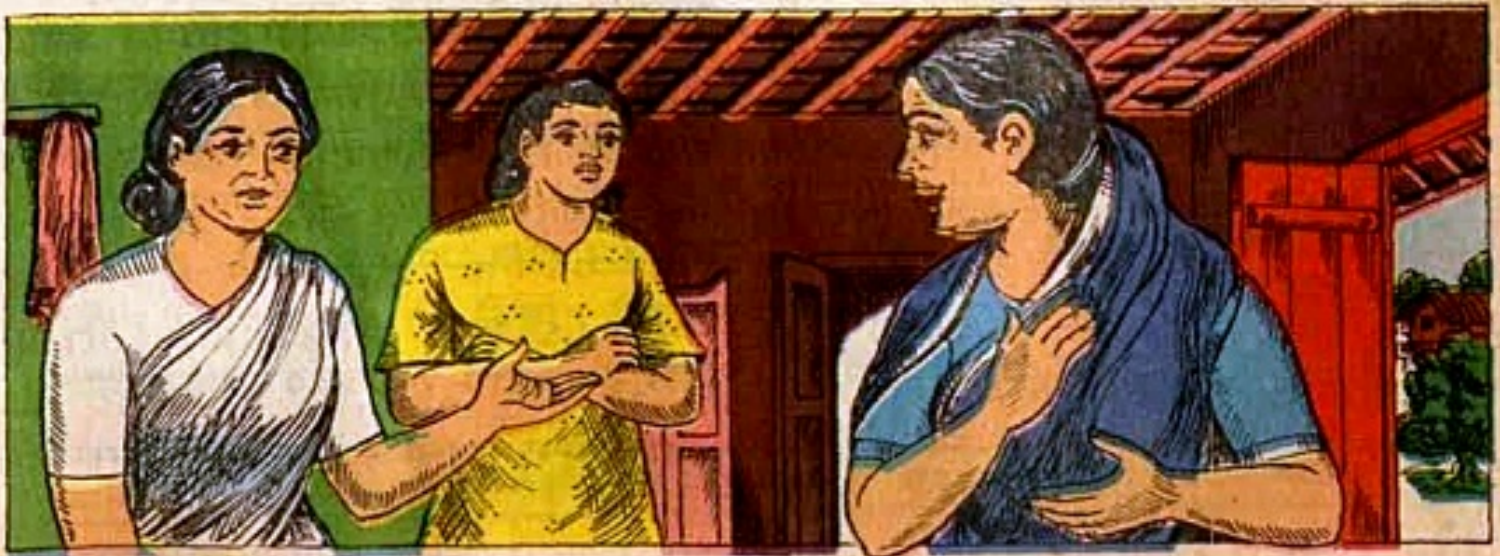
गुण-दोष

श्रीपति और जगपति नामक दोनों युवक एक ही गाँव के निवासी थे। श्रीपति अमीर और जगपति ग़रीब था। फिर भी दोनों बहुत ही अच्छे दोस्त थे। एक दिन दोनों मिलकर कोई और दूसरी जगह जा रहे थे। उन्होंने देखा कि गाँव के एक कुएँ पर दो लड़कियाँ पानी खींच रही थीं।

श्रीपति ने अपने दोस्त को वहीं ठहरने के लिए कहा और अपनी प्यास बुझाने कुएँ की ओर बढ़ा। इतने में उसे उन दोनों लड़कियों की बातचीत सुनायी पड़ी। दूर खड़े होकर ध्यान से उनकी बातें सुनने लगा।

रंगीन साड़ी पहनी लड़की, सफ़ेद साड़ी पहनी लड़की से कह रही थी "लक्ष्मी, सच बताना। तुम किस तरह का पति चाहती हो?" "रोहिणी, मैं तुमसे क्या छिपाऊँ? मेरी तो बड़ी-बड़ी आशाएँ हैं। मुझे चाहिये बहुत-से गहने और क़ीमती साड़ियाँ। चाहिये एक बड़ा महल। बहुत-से नौकर-चाकर हों, स्वादिष्ट भोजन हो, रोज़ पकवान खाती रहूँ। किन्तु हम जो-जो चाहती हैं, थोड़े ही हमें मिलेंगे। हमारी आशाएँ सबकी सब पूरी तो नहीं होंगीं ना?"

रोहिणी ने लंबी साँस भरते हुए कहा "मेरी तो ऐसी कोई आशा नहीं हैं। जो है, उसी से तृप्त होना चाहिये। गहने और साड़ियाँ हमारे भाग्य में बदे हैं, तो मिल जायेंगे। यह तो अपने-अपने भाग्य की बात है। अब रही पकवानों की बात। इमली का थोडा-सा अचार क़ाफ़ी है जीभ को तृप्त करने।"

उनकी बातों को सुनते हुए श्रीपति को एक उपाय सूझा। दानों लड़कियाँ अविवाहिता हैं। रोहिणी जैसी पत्नी उसे मिल जाए तो खर्चा कम होगा, रुपये पानी की तरह नहीं बहायेगी, उसकी आवश्यकताएँ भी सीमित होंगीं। पर, लक्ष्मी जैसी अनेकों आशाओंवाली

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

लड़की जगपति की पत्नी बने तो पता नहीं; वह किन-किन तकलीफ़ों से गुज़रेगा; उसकी क्या दुर्दशा होगी। यह सोचते-सोचते उसमें दुर्बुद्धि जगी कि ऐसा हो तो कितना अच्छा होगा।

इसलिए वह जगपति के पास आया और कहा "जो दो लड़कियाँ कुएँ से पानी खींच रही हैं, लगता है, अभी उनकी शादी नहीं हुई। हम भी शादी के लायक़ हो गये और जितना जल्दी हो सके, शादी करना भी चाहते हैं। रंगीन साड़ी पहनी उस लड़की से मैं शादी करूँगा। उस सफ़ेद साड़ीवाली लड़की से तुम शादी कर लेना। कहो, तुम्हारा क्या विचार है?"

जगपति ने 'हाँ' कह दिया। वे उन दोनों लड़कियों के पीछे-पीछे गये। उनके घर जाकर बड़ों से बात की। उनके प्रयत्न सफल हुए। बड़ी-बड़ी आशाएँवाली लक्ष्मी ने जगपति से शादी की और उसकी पुरानी झोंपड़ी में क़दम रखा। जो है, उसी में तृप्त रोहिणी ने संपन्न श्रीपति के महल में प्रवेश किया।

रोहिणी ने जैसे ही श्रीपति के महल में प्रवेश किया, पूरा महल देखा और पूछा "घर में एक भी नौकर दिखायी नहीं देता।" श्रीपति ने हँसते हुए कहा "नौकरों की क्या ज़रूरत ? अब तो तुम आ गयी हो। घर का काम हम दोनों संभाल लेंगे।" रोहिणी ने रसोई का काम शुरु करते हुए कहा "कहिये, क्या तरकारियाँ बनाऊँ? पकवान क्या बनाऊँ?"

"तरकारियों और पकवानों की क्या ज़रूरत? अन्न में इमली का अचार हो तो काफ़ी है। उसी से काम चला लेंगे। आख़िर पेट ही तो भरना है।" श्रीपति ने कहा।

उस रात को रोहिणी ने अपने पति से कहा "हम इतने संपन्न हैं, इतना धन भरा पड़ा है, क्यों न गहने और क़ीमती साड़ियाँ पहनूँ। अब खरीदकर दीजिये ना।"

श्रीपति ने कहा "देखो, ऐसी बातें मत कर। संपदा के होने मात्र से उसे क्या लुटाना चाहिये? बेकार खर्च करते रहना चाहिये? साड़ियों और गहनों की चाह अच्छी नहीं है। इन सबसे है मुख्य है - तृप्ति।"

रोहिणी अपने ही आप बड़बड़ाती रही "लोभी, कंजूस।" दूसरे दिन सबेरे जब श्रीपति जगा तो उसने देखा कि घर में चार नौकर काम पर लगे हैं। उनसे उसने पूछा "तुम कौन हो? यहाँ क्या कर रहे हो?"

"हम नौकर हैं मालिक। मालकिन ने आज से काम पर रख लिया।" हाथ जोडते हुए बड़े विनय से उन लोगों ने कहा।

"क्या? चारों को नौकरी पर रख लिया? जाओ, चले जाओ। तुम चारों को वेतन देना मुझसे नहीं होगा" श्रीपति चिल्ला पड़ा।

इतने में रोहिणी ने वहाँ आकर शांतपूर्वक कहा "आप चुप रहिये। चार क्या, चालीस नौकरों को भी रखने की शक्ति है हममें। हमें तो इस बात पर गर्व करना चाहिये कि हमारे यहाँ इतने लोग काम पर रखे गये हैं।"

श्रीपति जैसे ही भोजन करने बैठ गया, रसोइया आया और चार प्रकार की तरकारियाँ परोसीं, पकवान भी थाली में रखे।

"मेरा दिवाला पिट रहा है, मैं बरबाद हो रहा हूँ," श्रीपति ने चिल्लाया। "चुप हो जाइये। क्यों चिल्ला रहे हैं? नौकर सुनेंगे तो हँसेंगे। हम खूब खा सकते हैं और दूसरों को खिलाने की शक्ति भी रखते हैं। फिर क्यों यह रोना-धोना।" रोहिणी ने कहा।

फिर चार दिनों के बाद रोहिणी ने क़ीमती कपड़े और गहने लाकर पति को दिखाया। श्रीपति उन्हें देखकर रोते हुए कहने लगा "मैं भिखारी बन गया, मैं मिट गया, मैं बरबाद हो गया।"

उसके आँसू पोंछती हुई रोहिणी ने उससे कहा "रोइये मत, रोने से क्या फ़ायदा?"

"रोऊँ नहीं तो और क्या करूँ? उस दिन कुएँ पर तुम्हारी बातें सुनकर मैं धोखा खा गया। एकदम झूठी हो।" श्रीपति ने कहा।

रोहिणी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "अच्छा, यह बात है। तो आपने उस दिन की मेरी बातें सुनीं और मुझसे शादी की। इतना तो विश्वास कीजिये कि मैं झूठी नहीं हूँ। हम ग़रीब होते, हमारे पास संपदा न होती तो मैं क्योंकर खर्च करती। जो है, उसी

में संतृप्त रहती। पर अब बात तो ऐसी नहीं। हम तो अमीर हैं। कितना भी खर्च करें, नहीं घटेगा।"

श्रीपति ने सोचा कि जब मेरी यह हालत है तो मालूम नहीं जगपति पर क्या गुज़रता होगा। पता नहीं, वह कैसी मुसीबतों का सामना करता होगा। वह जगपति के घर गया। वहाँ पहुँचने पर उसने देखा कि जगपति और लक्ष्मी खाना खा रहे हैं। श्रीपति को देखकर जगपति ने बड़े प्यार से उसका स्वागत किया।

दंपति के सामने श्रीपति बैठ गया और सोचने लगा कि बड़े-बड़े सपने देखनेवाली इस लक्ष्मी से यह जगपति कैसे निपट रहा होगा। किन्तु जगपति की सूरत को देखते हुए उसे लगा कि वह पत्नी की वजह से परेशान नहीं है। उल्टे वह बड़ी ही खुशी व उत्साह से भरा दिख रहा है। वे तो इमली के अचार को मिलाकर ही भात खा रहे हैं। पर, लक्ष्मी के चेहरे पर असंतृप्ति दृष्टिगोचर ही नहीं हो रही है। हाँ, झोंपड़ी पुरानी है, पर साफ़-सुथरी है। खाना खा चुकने के बाद जगपति, श्रीपति के बग़ल में आकर बैठ गया। कहा "तुमसे मिलना चाहता था, पर समय ही नहीं मिला। कहो, कैसा है तुम्हारा नया परिवार?" "हम बिलकुल ठीक हैं। उधर देखो। पिछवाड़े का ऊबड़-खाबड़ समतल कर दिया। पौधे रोपे। पक जायेंगे तो बहुत आमदनी भी होगी।" जगपति ने निश्चिंत होकर कहा।

"ऐसी बात है? क्या तुम्हारी पत्नी भी तुम्हारा हाथ बंटा रही है? गहनों व साड़ियों के लिए तुम्हें तंग नहीं कर रही है?" श्रीपति ने बड़ी ही अधीरता से पूछा। "ऐसी कोई बात नहीं।" जगपति ने कहा। श्रीपति ने लक्ष्मी से पूछा "तो उस दिन कुएँ पर जो बातें हुईं, वे सब की सब उलट-पुलट हो गयीं?"

"उलट-पुलट? बिल्कुल नहीं। भाई साहब, यह सच है कि उस दिन मेरी बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं। परंतु अब मैंने वास्तविक स्थिति को जाना-पहचाना और अपनाया। उन्हीं के अनुसार जो है, उसी से तृप्त होकर जीना सीख गयी हूँ।" लक्ष्मी ने सहर्ष कहा।

श्रीपति ने अब सबक़ सीख लिया। संपत्ति से इच्छाएँ बढ़ती हैं। दरिद्रता उन्हें वश में रखती है।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, दिसंबर, १९९६ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

MAHANTESH C. MORABAD

MAHANTESH C. MORABAD

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ २० अक्तूबर, '९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

अगस्त, १९९६, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **हमराज़ मेरे बनो**

दूसरा फोटो : **गीत हमारा सुनो**

प्रेषक : **अमित उत्तमराव चौधरी**

'साईकृपा' नवजीवन कालनी वैजापूर पिन - ४२३७०१, औरंगाबाद जिला, महाराष्ट्र

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ७२/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process private Ltd., 188, N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

THE MOST ENDEARING GIFT YOU CAN THINK OF
FOR YOUR NEAR AND DEAR WHO IS FAR AWAY

CHANDAMAMA

Give him the magazine in the language of his choice—
Assamese, Bengali, English, Gujarati, Hindi, Kannada,
Malayalam, Marathi, Oriya, Sanskrit, Tamil or Telugu
—and let him enjoy the warmth of home away from home.

Subscription Rates (Yearly)

AUSTRALIA, JAPAN, MALAYSIA & SRI LANKA

By Sea mail Rs **129.00** By Air mail Rs. **276.00**

FRANCE, SINGAPORE, U.K., U.S.A.,
WEST GERMANY & OTHER COUNTRIES

By Sea mail Rs **135.00** By Air mail Rs. **276.00**

Send your remittance by Demand Draft or Money Order favouring
'Chandamama Publications' to:

CIRCULATION MANAGER **CHANDAMAMA PUBLICATIONS** CHANDAMAMA BUILDINGS
VADAPALANI MADRAS 600 026